छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा
हिन्दी मासिक मुख पत्र
मास-कार्तिक-मार्गशीर्ष, संवत् 2073
नवम्बर 2016

ओ३म्

अग्निदूत

अग्निं दूतं वृणीमहे. (ऋग्वेद)

अंक 135, मूल्य 10

स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती

भावभीनी श्रद्धाञ्जलि

यशः शेष डॉ. धर्मवीर

(सम्पादक, परोपकारी)

अमर क्रान्तिकारी
भाई परमानन्द

दि. 20 से 22 अक्टूबर 2016 को अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन टुँडिखेल (काठमांडू नेपाल) में सम्पन्न हुआ, जिसमें छत्तीसगढ़ प्रान्त से लगभग 500 आर्यजनों का जत्था शामिल हुआ था

अग्निदूत

हिन्दी मासिक

राष्ट्रीय, सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, राजनीतिक विचारों की मासिक पत्रिका

विक्रमी संवत् – २०७३
सृष्टि संवत् – १,९६,०८,५३,११८
दयानन्दाब्द – १९३

: प्रधान सम्पादक :
आचार्य अंशुदेव आर्य
प्रधान सभा
(मो. ०७०४९२४४२२४)

★

: प्रबंध सम्पादक :
आर्य दीनानाथ वर्मा
मंत्री सभा
(मो. ९८२६३६३५७८)

★

: सहप्रबंध सम्पादक :
श्री जोगीराम आर्य
कोषाध्यक्ष सभा
(मो. 9977152119)

★

: व्यवस्थापक :
श्री दिलीप आर्य
उपमंत्री (कार्यालय) सभा
मो. ९६३०८०१२५७

★

: सम्पादक :
आचार्य कर्मवीर
मो. ९७५२३८८२६७

पेज सज्जक : श्रीनारायण कौशिक
प्रबधंक : श्री रामेश्वर प्रसाद यादव

– कार्यालय पता –
छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा
दयानन्द परिसर, आर्य नगर, दुर्ग (छ.ग.)४९१ ००१
फोन : (०७८८) ४०३०९७२
फैक्स नं. : ०७८८-४०११३४२ ;
e-mail : chhattisgarhsabha@gmail.com

वार्षिक शुल्क - १००/- दसवर्षीय-८००/

वर्ष – १२, अंक ५ ओ३म् मास/सन् –नवम्बर – २०१६

श्रुतिप्रणीत–सिद्धधर्मवह्निरूपतत्त्वकं,
महर्षिचित्त–दीप्त वेद–सारभूतनिश्चयं ।
तदग्निसंज्ञकस्य दौत्यमेत्य सज्ञसज्ञकम् ,
सभाग्निदूत–पत्रिकेयमादधातु मानसे ।।

विषय – सूची

			पृष्ठ क्र.
१.	हमें क्रतु प्रदान कर	स्व. रामनाथ वेदालंकार	०४
२.	संकीर्ण राष्ट्रीयता से परे हो, शिक्षक का कार्य	आचार्य कर्मवीर	०५
३.	अहम यह है कि सर्जिकल स्ट्राइक अब नीति है.	डॉ. वेदप्रताप वैदिक	०८
४.	परिवारों का विघटन व भौतिकतावाद – एक समस्या	डॉ. बिजेन्द्रपाल सिंह	१०
५.	वेदों में कोई लौकिक इतिहास नहीं	खुशहालचन्द्र आर्य	१२
६.	महर्षि दयानन्द सत्य के ग्रहण और असत्य के त्याग के आदर्श उदाहरण	मनमोहन कुमार आर्य	१४
७.	प्रतिदिन यज्ञ करते हुए प्रायः लोगों को लाभ क्यों नहीं होता ?	आचार्य आर्य नरेश	१७
८.	"सफलता"	आचार्य कर्मवीर	१८
९.	क्या हमारे लिए दूसरा व्यक्ति अग्निहोत्र कर सकता है ? आगे	स्वामी मुक्तानन्द	२०
१०.	जीवन में बाधक "अहंकार"	दिलीप आर्य	२२
११.	अभिमत : भावी सिंहस्थ २०२८	रमेशचन्द्र चौहान	२३
१२.	जयंती : स्वामी दर्शनानन्द	डॉ. अशोक आर्य	२५
१३.	क्रांतिकारी भाई परमानन्द या परमाननंद	डॉ. विवेक आर्य	२६
१४.	होमियोपैथी से अस्थमा का उपचार	डॉ. विद्याकांत त्रिवेदी	२८
१५.	समाचार दर्पण		३०

सूचना : छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा का अणुसंकेत
(ई-मेल) E-mail : chhattisgarhsabha@gmail.com
(सम्पादक) E-mail : shastrikv1975@gmail.com

सूचना : हमारा नया वेब साइट देखें
Website : http:/www.cgaryapratinidhisabha.com

लेख में प्रकट किए विचारों के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है।

सम्पादक प्रकाशक मुद्रक – आचार्य अंशुदेव आर्य द्वारा छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग के वैदिक मुद्रणालय से छपवाकर प्रकाशित किया गया।

हमें क्रतु प्रदान कर

वेद वेदामृत

भाष्यकार - स्व. डॉ० रामनाथ वेदालङ्कार

इन्द्र क्रतुं न आभर, पिता पुत्रेभ्यो यथा।
शिक्षा णो अस्मिन् पुरुहूत यामनि, जीवा ज्योतिरशीमहि॥ ऋग्. ७.३२.२६

ऋषिः **मैत्रावरुणिः वसिष्ठः शक्तिः वसिष्ठो वा**। देवता **इन्द्रः**। छन्दः बृहती।

● **(इन्द्र)** हे परमात्मन्! **(नः)** हमें **(क्रतुं)** प्रज्ञा और कर्म **(आभर)** प्रदान कर, **(यथा)** जैसे **(पिता)** पिता **(पुत्रेभ्यः)** पुत्र को (प्रदान करता है)। **(पुरुहूत)** हे बहुस्तुत! **(अस्मिन्)** इस **(यामनि)** (जीवन के) मार्ग में **(नः)** हमें **(शिक्ष)** शिक्षा दे, (जिससे हम) **(जीवाः)** जीवित-जागृत (होकर) **(ज्योतिः)** ज्योति को **(अशीमहि)** प्राप्त करते रहें।

पिता पुत्र को जन्म से लेकर अन्त तक कुछ-न-कुछ शिक्षा देता ही रहता है। वह उसे ज्ञान भी देता है और कर्म करना भी सिखाता है। जब पुत्र लड़खड़ा रहा होता है, तब उसे चलना सिखाता है। जब वह अक्षर-ज्ञान के योग्यहोता है, तब उसे अक्षर-ज्ञान देता है। जीवन में वह उसे काम की बातें बताता है, शिष्टाचार एवं लोक व्यवहार सिखाता है। आचार्यकुल से स्नातक बनकर आने पर उसे सांसारिक बातों का ज्ञान देता है और उसके कार्यक्षेत्र में आने पर अपने अनुभव के आधार पर उसकी सहायता करता है। इसी प्रकार हे मेरे परमपिता परमात्मन्! तुम भी मुझे समय-समय पर क्रतु अर्थात् समुचित ज्ञान और कर्म प्रदान करते रहो। मैं कितना ही ज्ञानी हो जाऊँ, तुम्हारे सम्मुख अबोध बालक ही रहूंगा। ज्ञान की कोई सीमा नहीं, ज्ञान अनन्त है। अनेक जन्म लगाकर संचित किया हुआ भी मेरा ज्ञान समुद्र की एक बूंद के समान और विशाल पर्वत की एक कणी के समान रहता है। अतः तुम मुझे नित्य नवीन-नवीन सत्य ज्ञान की सरिता में स्नान कराते रहो। साथ ही मुझसे ऐसी प्रेरणा भी करते रहो कि ज्ञान के अनुसार मेरा आचरण भी हो।

हे जगदीश्वर! मेरी तुमसे प्रार्थना है कि अन्धकार और अविवेक के क्षणों में तुम मुझे सदा सत्य ज्ञान और सत्कर्तव्य बतलाते रहो।

हे पुरुहूत! हे बहुस्तुत! तुम जीवन मार्ग में सदा हमें अपनी बहुमूल्य सीख देते रहो। जीवन का मार्ग बड़ा ही विकट है, सदा ही मनुष्य को पथभ्रष्ट होने का भय बना रहता है। तुम पूर्ण हो, तुम्हारी शिक्षा भी पूर्ण है, अतः तुम्हारी ज्ञान और कर्म की शिक्षा से ही हमारा संकट टल सकता है। तुम्हारी शिक्षा से ही हम जीवित-जागृत रहते हुए तमस् से ज्योति की ओर बढ़ सकते हैं, अविवेक से विवेक की ओर पग बढ़ा सकते हैं, अकर्तव्य से कर्तव्य की ओर अग्रसर हो सकते हैं, अधः स्थिति से उच्च स्थिति को पा सकते हैं। अतः हे इन्द्र! हे ज्ञान एवं कर्म के परमैश्वर्य से युक्त परम प्रभु! तुम अपनी शिक्षाओं से सदैव हमें कृतार्थ करते रहो।

संस्कृतार्थ :- १. यान्ति यस्मिन् तस्मिन् मार्गे। या प्रापणे, मनिन्।

सम्पादकीय

संकीर्ण राष्ट्रीयता से परे हो, शिक्षक का कार्य

वर्तमान युग के भारत की सब से बड़ी समस्या है नैतिक मूल्यों का ह्रास और इसी कारण हमें आए दिन किसी न किसी संकट से दो-चार होना पड़ता है। चारित्रिक पतन के कारण ही हम अपेक्षित गति से उन्नति नहीं कर पा रहे हैं। हमारी कोई भी योजना ठीक प्रकार से सिरे नहीं चढ़ती और किसी भी समस्या का सही समाधान नहीं हो पाता। हमारी कार्य-विधियाँ भ्रष्ट तरीकों से आक्रान्त हैं। भौतिक समृद्धि की प्रबल कामना और दुर्दान्त महत्वाकांक्षा से प्रेरित होकर हम समाज के व्यापक हितों को ताक पर रख देते हैं और व्यक्तिगत-स्वार्थ सिद्धि के लिए अनेक अनैतिक रास्ते अपनाते हैं। परिणाम हमारे सामने है। हमारा शारीरिक, मानसिक विकास तो रुका ही है, सामाजिक प्रगति में भी गतिरोध पैदा हो गया है। विचार-क्षेत्र में तो हम बहुत पीछे रह गये हैं। इस दुर्दशा के लिए कौन उत्तरदायी है ? देश का आम आदमी अध्यापक को दोषी ठहराता है और यह दोषारोपण कुछ हद तक सही भी है। परन्तु सब बुराईयों का दोष अध्यापक के मत्थे मढ़ कर ही हम अपने दायित्व से मुक्त हो सकते हैं।

अध्यापक के चारित्रिक पतन और उसकी दिग्भ्रान्ति की बात, दो टूक शब्दों में कह देने वाले लोगों की कल्पना में अध्यापक वस्तुतः किसी प्राचीन ऋषि, तत्वदर्शी विचारक, वीतराग महात्मा, भगवद्-भक्त सन्त, समर्पित संन्यासी या किसी काल्पनिक सत्ययुग के किसी प्रतिष्ठित मनीषी का आदर्श रुप होता है। इसके अतिरिक्त वर्तमान युग के अध्यापक की नैतिकता पर अंगुली उठाने वाले लोग उसे समाज का अविभाज्य अङ्ग न मानते हुए ही उसे आम आदमी से कुछ भिन्न रुप में देखने की आशा करते हैं। वास्तव में समाज के भिन्न-भिन्न वर्गों को समन्वित और सामञ्जित रुप में न देख कर, उन्हें किसी सामान्य सम्पर्क-सूत्र से विच्छिन्न अलग-अलग द्वीपों के रुप में देखने की प्रवृत्ति ने ही लोगों को अध्यापक के लिए कुछ भिन्न नैतिक मापदण्ड बनाने की प्रेरणा दी है। उसे बृहत्तर समाज से अलग करके देखने की प्रवृत्ति ने ही उसे एक निर्जीव और जड़ आदर्श-पुंज बना कर म्यूजियम का शो-पीस सा बना दिया है। क्या व्यक्ति को व्यवस्था से अलग करके देखा जा सकता है ? व्यवस्था के जाल में फँसे व्यक्ति के लिए स्वतन्त्ररुप में अपना विकास करना इतना सरल नहीं होता। जनतन्त्र के इस युग में शिक्षा का व्यापक और अबाध विस्तार होने से, न तो विद्यार्थी में ही कोई विशिष्टता रही है और न अध्यापक में ही। हाड़-मांस के चलते फिरते पुतलों की ऋषियों-मुनियों से

तुलना करते रहना न तो न्याय-संगत है और न विवेक-सम्मत ही। आज युग तो बदला ही है, मानसिकता में भी आमूल तथा जनतन्त्र के उदय के साथ-साथ हमारा वैचारिक और सामाजिक परिवेश बिल्कुल बदल गया है। अब हम सब एक धरातल पर ही उतर आये हैं और हमारी आशाएँ-आकांक्षाएँ भी एक जैसी बन गई है। आज का अध्यापक, आज के समाज की उपज है और वह अपने जन्मदाता समाज का अभिन्न अंग है। अध्यापक सामान्यतः वही कुछ है, जो कुछ उसे बनाया गया है और जो कुछ वह बढ़कर कर रहे हैं, वह अपनी बुद्धि और विवेक के कारण है। इस बातों को यों भी कहा जा सकता है कि अध्यापक आज जो कुछ भी है, समाज के कारण से है और जो कुछ नहीं है, वह भी समाज के कारण से है।

आज सहज रुप में ही यह प्रश्न किया जा सकता है कि अध्यापक का निजी व्यक्तित्व क्या कुछ भी नहीं ? उत्तर में हम दो बातें कहेंगे। पहली यह कि आज व्यवस्था ने व्यक्ति को बहुत सीमा तक निर्जीव और अशक्त बना दिया है। अध्यापक इसी व्यवस्था का एक अङ्ग है। इस दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति से बच निकलने का कोई उपाय नहीं सोचा गया है। व्यवस्था और प्रशासन ने अध्यापक को नैतिक दृष्टि से कमजोर, निष्क्रिय और आलसी बनाया है। कोई भी व्यक्ति जब विचार और व्यवस्था तथा मूल्य और माप में बँधने के लिए मजबूर कर दिया जाता है, तो उसकी अपनी विचार शक्ति कुन्द पड़ जाती है और उसकी चेतना का विकास रुक जाता है। इसका उसके मनोबल और कार्य-क्षमता पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

हमारे अध्यापक को प्रतिभा का स्वतन्त्र और अबाध प्रयोग करने की न तो सुविधा है और न छूट ही। शिक्षण-विधि, पाठ्यक्रम-निर्माण एवं शिक्षा प्रशासन में उसकी भागीदारी, मशीन के एक छोटे से महत्वहीन पुर्जे से बढ़ कर और कुछ नहीं। राज्य नीति से बाहर जा सकने की छूट न होने के कारण वह अपने विवेक का स्वतन्त्र उपयोग कर पाने में भी असमर्थ है। उसे क्या पढ़ाना है और कैसे पढ़ाना है, यह भी दूसरे ही निश्चित करते हैं। इसका ज्वलन्त प्रमाण है वह शिक्षा-मंच, जिसे **'एड्यूकेटर्स फॉर डेमाक्रेसी, सोशलिज्म एण्ड सैक्यूलरिज्म'** के नाम से पुकारा जाता है और जिसे किन्ही शासकों का आशीर्वाद प्राप्त रहा है। अब तो अध्यापक को प्रचार के साधन के तौर पर इस्तेमाल करने में भी गुरेज नहीं किया जाता। सन् १९६२ के चीनी आक्रमण के दौरान अध्यापकों ने एक अलिखित सरकारी आदेश से देश-भर में चाऊ-माऊ के विरुद्ध रैलियों का आयोजन किया गया। हमारे एक अपहृत विमान को पाकिस्तानियों द्वारा लाहौर में जला दिए जाने पर भी स्कूलों और कालेजों के अध्यापकों और विद्यार्थियों ने रैलियाँ की थीं। युद्ध-पूर्व के जर्मनी में जर्मन-क्रान्ति की श्रेष्ठता का प्रचार करने के लिए भी अध्यापकों की सेवाएं ही सब से अधिक काम में लाई गई थी और दूसरे विश्व-महायुद्ध के दौरान चर्चित की 'वी' (विक्टरी) के बिल्ले भी अध्यापकों की कमीजों पर ही लगाये गये थे।

हम यह नहीं कहते कि अध्यापक देश-प्रेम का पाठ न पढ़ाएँ। हम तो केवल उसे प्रचार-तन्त्र का पुर्जा मात्र बना दिये जाने की बात कह रहे हैं। देश की अखण्डता और प्रभुसत्ता की रक्षा करना बुरा नहीं, बुरा तो है सरकारी प्रचारतन्त्र का माध्यम बनना, या शासक वर्ग के हाथों की कठपुतली-मात्र बनकर रह जाना। राष्ट्रीय जीवन-धारा में अध्यापक एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, परन्तु जलसा, जुलूस, नारेबाजी और अर्थी जलाना आदि तरीके उसकी प्रबुद्ध मानसिकता और सतत जागरुक संवेदनशीलता के प्रतिकूल पड़ते हैं। इसके अतिरिक्त अध्यापक का

इन सब बातों से सीधा सम्बन्ध भी तो नहीं होता।

समाज में परिवर्तन लाने के बहुत से साधन अध्यापक के हाथ में है, परन्तु उसे पहले आत्मनिरीक्षण जरूर कर लेना चाहिए। उसे देख लेना चाहिए कि वह मनुष्यमात्र की आधारभूत एकता में विश्वास करता है। वह जाति और सम्प्रदाय की जड़ घेरेबन्दी को तोड़ने में समर्थ है।। वह संकीर्ण राष्ट्रीयता और उपजातिवाद की आत्मघाती प्रवृत्तियों के प्रति सावधान है। उसकी वैज्ञानिक दृष्टि ने उसके भावनालोक को स्वस्थ और सन्तुलित बना दिया है। वह मध्ययुगीन सामन्ती मानसिकता को तिलाञ्जलि दे कर शोषण और परोपजीविता से मुक्त हो चुका है। यदि अध्यापक वास्तव में विश्वमानव बन गया है, तो वह गुलामी की मानसिकता का जुआ उतार फेंकने और मनुष्य जाति को मुक्ति दिला सकने में समर्थ है . परन्तु अपने में इन गुणों का विकास करने के लिए कड़े आत्म-संघर्ष और कष्टसहिष्णुता की आवश्यकता है। धारा के विपरीत चलने की शक्ति के धनी अध्यापक ही समाज का नेतृत्व कठमुल्लाओं के हाथ से छीन सकते हैं। समाज का नेतृत्व अपने हाथ में लेने के लिए उन्हें एक तो अपने आचार और व्यवहार को अनुकरणीय और आदर्श बनाना होगा और दूसरे अपने अध्ययन और अध्यवसाय के बल पर अपने को ज्ञान का भण्डार बनाना होगा। सही ज्ञानऔर सम्यक् आचार से ही अध्यापक समाज में व्याप्त विसंगतियों, विरोधाभासो एवं हर प्रकार की विषमताओं को मिटा सकता है।

जड़ता हमारी सबसे बड़ी कमजोरी है। इसी का दूसरा नाम है यथास्थितिवाद। किसी भी नयी बात के लिये हम कह देते हैं कि यह चल नहीं पाएगी। साम्राज्यवादी शक्तियाँ कहती हैं कि उनके अधीन देश स्वशासन का सामर्थ्य नहीं रखते। नारी-मुक्ति के विरोधी आज भी उसे पुरुष के बराबर की भागीदारी बनने के योग्य नहीं मानते। 'मार्शल रेस' की धारणा आज भी कुछ जातियों के **'अहं'** की दीप्त किए हुए हैं और समाज में विकृति पैदा कर रही है। आज भी देश में बहुत से ऐसे लोग हैं, जो अंग्रेजी की प्रभुसत्ता बनाए रखने में ही देश की भलाई समझते हैं। स्वदेशी भाषाओं को शिक्षा का माध्यम बनाने की वे आत्महत्या-तुल्य मानते हैं। हमारे यहां हर गलत बात को किसी ऊँचे सिद्धान्त का जामा पहनाया जाता है और हर गलत अभियान को कोई नेक-सा नाम दिया जाता है। हमारा नेतावर्ग और सर्वोच्च शासक समुदाय देश और समाज की ज्वलन्त समस्याओं से बड़ी चतुराई से कन्नी काट जाता है। यह यथास्थितिवाद से उत्पन्न जड़ता है। अध्यापक इसे तोड़ सकता है, यदि वह समाज के प्रति प्रतिबद्ध है। परन्तु ऐसा करने के लिए उसे 'न्यूट्रल गियर' से निकलना होगा और समयगत सच्चाईयों से जुड़ना होगा।

समाज और मानव-हितों के प्रति प्रतिबद्धता अध्यापक के चरित्र को दृढ़भित्ति प्रदान कर सकती है। यह प्रतिबद्धता हमारे संकल्प को दृढ़ करती है और चरित्र को शक्ति प्रदान करती है। मशीन में शक्ति तभी आती है जब उसे गियर में डाला जाता है। प्रतिबद्धता मशीन को गियर में डालने के समान है, परन्तु बहुत जागरुक व्यक्ति ही अपनी प्रतिबद्धता को सही दिशा दे सकता है। यह प्रतिबद्धता जरा-सी असावधानी से एक व्यक्ति, वर्ग, समूह या सम्प्रदाय के प्रति अन्ध भक्ति में परिणत होकर मानवाधिकारों का हनन करने लगती है।

आज आवश्यकता है कि शिक्षक अपना वास्तविक कर्त्तव्य पहचान कर पूरे समाज को नैतिक एवं चारित्रिक शक्ति से सम्पन्न बनाने की दिशा में ठोस एवं योजनाबद्ध प्रयास करें, जिससे भारत पुनः विश्व गुरु के गौरव को पा सके।

- आचार्य कर्मवीर

प्रासंगिक

अहम यह है कि सर्जिकल स्ट्राइक अब नीति है

– डॉ. वेदप्रताप वैदिक

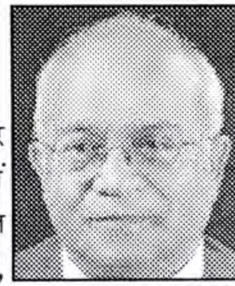

भारत और पाकिस्तान के बीच आजकल जो चल रहा है वह अजूबा है। यह अंतर्राष्ट्रीय राजनीति के इतिहास में एक विलक्षण प्रहसन के तौर पर जाना जाएगा। मुठभेड़ हुई है दो देशों के बीच, लेकिन दंगल उनके बीच नहीं, उनके अंदर चल रहा है। भारत में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के विरोधी हाथ धोकर उनके पीछे पड़ गए हैं। वे कह रहे हैं कि भारत ने यदि नियंत्रण रेखा के पार शल्य-चिकित्सा (सर्जिकल स्ट्राइक) की है तो सरकार कोई प्रमाण क्यों नहीं देती ? दूसरे शब्दों में सरकार प्रचार में तो मेधावी है, लेकिन प्रमाण में मंदबुद्धि क्यों हैं ? फौज ने जब प्रमाण बनाकर वीडियो प्रधानमंत्री को सौंप दिए हैं तो प्रधानमंत्री संयम का उपदेश क्यों दे रहे हैं ? जो लोग प्रमाण मांग रहे हैं, वे फौजी कार्रवाई की तारीफ तो जमकर कर रहे हैं लेकिन सरकार के हाथ मजबूत करने के नाम पर उसकी टांग खींच रहे हैं। राहुल गांधी का 'खून की दलाली' वाला बयान बहुत जरहीला है।

उधर पाकिस्तान की सरकार पहले दिन से बार-बार कह रही हैं कि नियंत्रण-रेखा के पार कोई हमला हुआ ही नहीं है। यह कोरी गप है। भारतीय फौजों ने कौन से सात 'लांच पैड' उड़ाए हैं और कौन से ३८ पाकिस्तनी जवान और आतंकी मारे हैं, जरा वह दुनियां को बताए। उसने कुछ अपने और कुछ प्रसिद्ध विदेशी पत्रकारों को ले जाकर नियंत्रण-रेखा के वे स्थान भी दिखा दिए, जिन पर हमले का दावा हमारी सरकार ने किया था। संयुक्त राष्ट्र पर्यवेक्षकों और इन पत्रकारों ने कहा है कि उन्हें हमले के कोई सबूत नहीं मिले।

यदि भारत ने कुछ नहीं किया है तो फिर पाकिस्तान में इतनी उथल-पुथल क्यों मची हुई है ? प्रधानमंत्री नवाज शरीफ को रोज बयानबाजी क्यों करनी पड़ रही है ? वे अपने सेनापति राहील शरीफ से मंत्रण क्यों कर रहे हैं ? उन्हें मंत्रिमंडल, सभी दलों और संसद की आपात बैठक क्यों बुलानी पड़ रही है। सारी बात आई-गई हो जानी चाहिए, लेकिन अफवाहों का बाजार गर्म है। अफवाह ये भी है कि दोनों शरीफ अपनी शराफत की हद पर पहुंच गए हैं। नवाज शरीफ ने फौज और आईएसआई से कह दिया है कि आतंकियों के खिलाफ जो भी कार्रवाई हो, उसमें वे बिल्कुल अडंगा न लगाएं। पाकिस्तानी अखबार 'डान' की खबर है कि प्रधानमंत्री ने राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार जेंजुआ और गुप्तचर मुखिया अख्तर को आदेश दिया है कि वे पाकिस्तान के चारों प्रांत में जाएं और आतंकियों के खिलाफ कार्रवाई करें। पाक-प्रवक्ता ने इस खबर को मनगढ़ंत बताया है लेकिन पाक मीडिया पर यह खबर छाई हुई है।

असल बात यह है कि उड़ी में हुआ हमला पाकिस्तान को बहुत महंगा पड़ गया है। उड़ी जैसे आतंकी हमले कई हो चुके हैं। भारत ने कई बार जवाबी कार्रवाई भी डटकर की है, लेकिन इन छुट-पुट मुठभेड़ों का जैसा प्रचार इन दिनों हुआ है, पहले कभी नहीं हुआ। हमारी प्रचार प्रेमी सरकार बधाई का पात्र है, जिसने सारी दुनियां में पाकिस्तान की दाल पतली कर दी है। वह इतना अकेला १९७१ में भी नहीं पड़ा था, जब उसने पूर्वी पाकिस्तान में नर-संहार किया था। उस समय अमेरिका और चीन उसकी पीठ ठोक रहे थे, लेकिन उड़ी की घटना ने उसे 'अंतर्राष्ट्रीय अछूत' बना दिया है। दुनियां की किसी भी महाशक्ति किसी भी मुस्लिम राष्ट्र और किसी भी दक्षेस राष्ट्र ने पाकिस्तान के लिए सहानुभूति का एक शब्द भी नहीं बोला। उड़ी हमले की सबने निंदा की तथा भारत की जवाबी कार्रवाई को सही और जरुरी बताया। इस्लामाबाद में होने वाला दक्षेस सम्मेलन स्थगित हो गया। पाकिस्तान और आतंकवाद एक-

नियंत्रण रेखा के पार सैन्य कार्रवाई पर निरर्थक विवाद और नेताओं के बयानों की अपरिपक्वता

दूसरे के पर्याय बन गए। आझ आतंकवाद इतना घृणित शब्द है कि जो राष्ट्र भी इसमें लिप्त पाया जाएगा, उसे दुनियां 'गुंडा राज्य' (रोग स्टेट) कहने के लिए तैयार है। पाकिस्तान की परेशानी का कारण यही है।

सच पूछा जाय तो सारा मामला अब ठंडा पड़ जाना चाहिए, क्योंकि मोदी ने भी इसे तूल देना ठीक नहीं समझा है और नवाज भी कह रहे हैं कि अब कुछ हुआ ही नहीं है। किन्तु यह गरमया जाता रहेगा, क्योंकि यह अब जितना भारत-पाक के बीच है, उससे कहीं ज्यादा यह दोनों देशों की आंतरिक राजनीति का अहम मुद्दा बन गया है। भारत में उत्तरप्रदेश और पंजाब के चुनाव हैं। पाकिस्तान में सेनापति राहील शरीफ अगले माह रिटायर होने वाले हैं और 'पनामा पेपर्स' से निकले काले धन की वजह से नवाज शरीफ कमजोड़ पड़ गए हैं। फौजी तखता-पलट की अफवाह भी गर्म है। इधर भारत में ढाई साल के राज ने मोदी की छबि को काफी मंदा कर दिया था। दिल्ली और बिहार में मात खाने तथा उत्तराखंड और अरुणाचल में दुर्गति के बाद यह उड़ी-कांड एक आसमानी वरदान की तरह टपक पड़ा। अब भाजरा इसे भुनाए तो इसमें गलत क्या है ? इसी संभावना ने भारत के विरोधी दलों को हड़का दिया है। वे और नवाज शरीफ बिल्कुल एक ही आवाज में बोल रहे हैं। 'सर्जिकल स्ट्राइक' हुई ही नहीं। बेचारे विंरोधी नेता अब पछता रहे हैं। पहले उन्होंने इस नकली कार्रवाई का इतनी गर्मजोशी से स्वागत क्यों कर दिया? राहुल गांधी के दनों बयानों प्रशंशा और निंदा में गहरी अपरिपक्वता दिखाई पड़ती है। पता नहीं उन्होंने कौन पट्टी पढ़ा रहा है ? अपने नेता के बयानों पर बेचारे बुजुर्ग कांग्रेसी नेता बंगले झांक रहे हैं। यदि सर्जिकल स्ट्राइक विवादास्पद बन गयो तो भी जो फायदा भाजपा को मिल गया, सो मिल गया। बस डर यही है कि यह विवाद कहीं अंतर्राष्ट्रीय बहस का मुद्दा न बन जाए। उस स्थिति में मोदी सरकार ही नहीं, भारत की प्रतिष्ठा भी दांव पर लग सकती है। तब सरकार के पास 'सर्जिकल स्ट्राइक' के प्रमाण पेश करने के अलावा कोई चारा नहीं रहेगा।

यह तर्क बिल्कुल बोदा है कि इन प्रमाणों को दिखाने से हमारे हथियार हमारी रणनीति और हमारे रहस्य दुनियां के सामने उजागर हो जाएंगे। एक स्थानीय और छोटी-सी कार्रवाई के लिए इतने बड़े-बड़े बहाने बनाने की कोई जरुरत नहीं है। हो सकता है कि मोदी सरकार पर झूठ बोलने और फौजियों के खून की दलाली के सारे आरोप लगाने के बाद विरोधी नेता जब गदगद होने लगें तो उसी वक्त मोदी सर्जिकल स्ट्राइक के सारे प्रमाण उनके मुंह पर दे मारे। ये प्रमाण प्रकट हों या न हों, लेकिन सर्जिकल स्ट्राइक, जिसका सरकार ने इतना प्रचार किया है और जो पहले गुपचुप होती थी, वह अब सरकार की नई नीति बन गई हैं। देखें, इस नई नीति का पालन कहां तक होता है ?

ऐसा हिन्दुस्तान हो

सुख-सुविधा से परिपूर्ण यह अपना हिन्दुस्तान हो,
अच्छे हो आचरण सभी के ऐसा हिन्दुस्तान हो,
टूटे नहीं एकता अपनी बिखरा नहीं समाज हो,
कल की उन्नति होने का आभास हमें जो आज हो।
छूटे गन्दी राजनीति से पिंड हमारे देश का,
विद्रूपण हो पाए न अपनी संस्कृति के परिवेश का।
ऐसा वातावरण बने जिसमें सामाजिक न्याय हो,
वर्गभेद सारे मिट जाएं, कहीं न दहती हाय हो।
समता का दर्शन-चिन्तन हो, सब में दृष्टि समान हो,
मुक्ति रोग से दुःख-दारिद से, शक्तियुक्त आह्वान हो।
ऐश्वर्यों का ईश्वर प्रकटे, स्वर्गोपम यह स्थान हो,
युग-युग का यह स्वप्न संजोये ऐसा हिन्दुस्तान हो।
अपना विभव महान्, देश का फिर से अभ्युत्थान हो,
सारे जग में सदा चमकती इसकी अपनी शान हो।

- श्री मोहनलाल मन्टन, नई दिल्ली

सामयिक

'परिवारों का विघटन व भौतिकतावाद - एक समस्या

- डॉ. बिजेन्द्रपाल सिंह

महाराजा भर्तहरि जब सन्यास लेकर वन जाने लगे तो उन्होने अपनी प्रिय पत्नी पिंगला से कहा कि आधा राज्य तुम्हें दे दूँ तो इस पर कात्यायनी ने कहा - "यदि मुझे सम्पूर्ण धरा भी मिल जाए तो क्या मुझे अमरता मिल सकती है ? महाराज मुझे वह ज्ञान दीजिए जिससे मैं अमर हो सकूं।"

कहने का तात्पर्य यह है कि हमारे प्राचीन भारत में भौतिकवाद नहीं था । आध्यात्मिक ज्ञान का उस समय सर्वाधिक महत्व था। धन-दौलत, स्वर्ण-आभूषण व प्रमाद के कार्यों से व्यक्ति बचते थे। धन वैभव की चकाचौंध से दूर रहते थे। भौतिकवाद की छाया भी उनके पास न आती थी। आत्मिक ज्ञान ही उनका मुख्य आभूषण होता था, ऐसे महापुरुष थे हमारे राजा महाराजा, जिनके बड़े-बड़े राज्य होते थे। अपना समस्त राजपाठ अपने उत्तरदाधिकारी को सौंप कर संन्यास ग्रहण कर वनों में अपना जीवन व्यतीत करते थे। आज व्यक्ति अन्तिम श्वांस तक भी अपनी चल-अचल सम्पत्ति को छोड़ना नहीं चाहते, जबकि मृत्यु समय पर वह सब यहीं रह जाती है। आज भी हमें जीवन के चौथे आश्रम के अनुसार सगे सम्बन्धी धन, स्त्री आदि छोड़ केवल वेद प्रचर, समाज सेवा, आत्म ज्ञान व आत्मिक शान्ति हेतु जीवन समर्पित करना चाहिए। धन न तो हम लेकर आए थे न साथ लेकर जाएंगे । सिकन्दर भी जब दुनियां से गया उसके हाथ खाली थे। करोड़पति व अरब पति भी जब जाते हैं तो सारा धन सम्पत्ति छोड़कर चले जाते हैं। सब यहीं रह जाता है यदि साथ जाता है तो धर्म साथ जाता है अच्छे बुरे कर्मों का पिटारा साथ जाता है । भंगवान श्रीराम, श्रीकृष्ण, महाराजा प्रताप आदि को हम क्यों याद करते हैं, उन्होने धर्म हेतु कार्य किए अच्छे कार्य किए दुखियों की सेवा की, निर्बलों की सहायता की, प्रजा के हित के लिए कार्य किए । अतः बड़ी श्रद्धा से हम महापुरुषों को याद करते हैं। वह आज हमारे मध्य अमर हैं। यही धर्म साथ जाता है इसीलिए सहस्रों वर्ष पश्चात् हम महापुरुषों को याद करते हैं।

भारत प्राचीन काल में आध्यात्मिक ज्ञान में विश्व गुरु था, आत्मिक ज्ञान ही सर्वोपरि था और इस ज्ञान को प्राप्त करने विश्व भर के लोग यहां आते थे यहां गुरुकुल आश्रम, व विश्वविद्यालय थे। ऋषि महर्षि आचार्यहण वेद का पावन ज्ञान शिष्यों को दिया करते थे और यह ज्ञान गुरु, शिष्य परम्परा द्वारा गंगा की अविरल धारा की भांति एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में प्रवाहित होता रहता था। उस समय चारों ओर सत्य था न्याय था, धरती पर समस्त जन परिवार की भांति रहते थे। कहीं छल-कपट, पक्षपात, ईर्ष्या, द्वेष, ऊँच-नीच की भावना न थी। सभी में परस्पर प्रेम व सहयोग था, माता-पिता, आचार्य व विद्वानों का सम्मान था, कहीं चोरी न होती थी न कोई असत्य बोलता था। हरिश्चन्द्र को कौन नहीं जानता अपने कर्त्तव्य का निर्वहन प्राणों से भी अधिक करते थे। आज सब स्वप्न सा बन गया है।

आज से तीस-चालीस वर्ष पूर्व तक संयुक्त परिवार थे, दादा-परदादा, चाचा-ताऊ, भतीजे तीन पीढ़ी के सदस्य एक साथ बड़े प्रेम से रहते थे । सभी बड़ों को आदरणीय मानते थे। प्रत्येक छोटा अपने से बड़ों को प्रातः उठते ही चरणस्पर्श करते थे । बड़ों की आज्ञा का पालन करते थे । वृद्धों का सम्मान होता था, वृद्धजन भी अपने संयुक्त परिवार को पक्षपात रहित होकर सत्य व न्याय से चलाते थे। सभी अपने-अपने कर्त्तव्यों का पालन करते थे। कहीं दरवाजों पर ताले नहीं लगते थे । परस्त्री को तीन ही रुपों में देखा जाता था। बड़ी हो तो माता, बराबर की बहन और छोटी को बेटी के समान आदर सम्मान दिया जाता था। स्त्री पुरुषों का चरित्र श्रेष्ठ होता था, नैतिकता का पूरा ध्यान रखा जाता था, चरित्र निर्माण व संस्कारों की शिक्षा पीढ़ी दर पीढ़ी चलती रहती थी। लोग बुरा काम करने में घृणा करते थे। समाज में श्रेष्ठता की प्रतिष्ठा को बनाए रखना सर्वोपरि

कार्य था। लोग डरते थे कि कहीं कोई बुरा काम न हो जाय, समाज की अंगुलि उठाने से भी डरते थे। कहीं बुराई के पात्र न बने।

आज सर्वत्र एकल परिवारों का प्रचलन है अर्थात् पति-पत्नी और केवल मात्र उनके बच्चे। यही प्रथा ग्रामीण स्थानों में है। यही नगर व महानगरों में। यह आज भौतिकवाद की देन है, जहां सम्बन्धों का कोई महत्व नहीं रह जाता। पाश्चात्य संस्कृति की देन है यह। आज की पीढ़ी के बच्चे बड़ों के पैर छूना तो अलग हाथ जोड़ कर नमस्ते करने में अपमान समझते हैं। पहली बात तो संयुक्त परिवार नहीं रहे। एकांकी परिवारों में जन्मे बच्चे अधिकांशतः अपने चाचा ताऊ दादा-दादी आदि से दूर रहते हैं और कई कई वर्षों तक सम्पर्क नहीं हो पाता है। होता यह है कि दादा पोतों में आपस में आत्मीयता का भी अभाव ही रहता है और चाचा, ताऊ, मामा, नाना आदि से भी अनभिज्ञ से ही रहते हैं।

प्राचीन काल में नैतिक ज्ञान, सामाजिक ज्ञान व चरित्र की शिक्षा जो परदादा से दादा तक दादा से पिता तक तथा सन्तानों तक चली आती थी, इसीलिए लोग बुराईयों से बचते थे। दादा-दादी, नाना-नानी एवं ग्राम के सम्भ्रान्त व्यक्ति एक स्थान पर बैठकर दिन या रात्रि को कुन्ती, अर्जुन, श्रवण कुमार, आरुणि, द्रोणाचार्य, राम, कृष्ण, चक्रवर्ती सम्राटों की कहानियाँ सुनाया करते थे और ग्राम के व्यक्ति बच्चों की गतिविधियों का भी ध्यान रखते थे। चरित्र पर विशेष ध्यान दिया जाता था। भले ही बालक विद्यालय में न जाए, परन्तु उनको नैतिकता व चरित्र निर्माण का पाठ विरासत में मिल जाता था। वह झूठ बोलने से डरते थे, चोरी करने से डरते थे, गाली देने से डरते थे, किसी का अहित नहीं करते थे। उन्हें आरम्भ से सिखाया जाता था कि ईश्वर निराकार है, सर्वव्यापक है, वह सब कुछ देखता रहता है। कर्मों के अनुसार फल देने वाला है। पुरानी पीढ़ी इन बातों को जानती थी। अतः बुरे काम नहीं करती थी औरक कहीं समाज में बुराई के पात्र न बन जाएं इसलिए बुराईयों से पिछली पीढ़ी डरती थी।

आज लोग ईश्वर को भूल गए, अतः ईश्वर के स्वरुप को भी भूल गए, इसीलिए चारों ओर अपराधों का बोलबाला है। ईसाई व इस्लाम में तो पुनर्जन्म, कर्मफल आदि को कोई नहीं मानता उनके अनुसार खूब खाओ-पीओ कुछ भी करो, कल किसने देखा है और ईसाई संस्कृति जैसे जैसे भारत में बढ़ रही है भारतीय वैदिक संस्कारों से दूर होते जा रहे हैं। अज्ञानता बढ़ रही है इसीलिए अपराध बढ़ रहे हैं। वैदिक संस्कृति का प्रवाह जो एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में प्रवाहित होते रहते थे उनका प्रवाह रुक गया है, एकांकी परिवार होने से बुराई का भय नहीं रहा। कोई घर में वृद्ध (बुजुर्ग) समझाने वाला नहीं रहा और वृद्धों की कोई सुनता भी नहीं पहले समाज के लोग एक दूसरे की अच्छाई बुराई को देखते थे। आज ऐसा नहीं है। परिवारों का विघटन एक समस्या बन गया है। न वह शिक्षा रही जो ऋषियों से मिलती थी न ऐसा समाज रहा, न वह वैदिक वर्ण आश्रम व्यवस्था रही। इसी कारण चारो ओर दुख, क्लेश वैमनस्य, भय व चिन्ता व्याप्त है।

पता : चन्द्रलोक कालोनी, खुर्जा

स्वास्थ्य चर्चा

कफ (बलगम) निवारण व उपाय

0 सोंठ चूर्ण, मुलैठी चूर्ण आधा-आधा चम्मच मिलाकर पानी के साथ पीने से छाती में जमा कफ कम होता है और खांसी में आराम मिलता है।

0 सितोपलादि चूर्ण आधा चम्मच, शहद के साथ चांटने से लाभ होता है।

0 सोते समय एक बहेड़े के छिलकों का टुकड़ा अथवा अदरक का टुकड़ा छीलकर चूसते हुए सो जाने से कफ साफ होता है।

0 २५ ग्राम अलसी को कुचलकर ३७५ ग्राम पानी में औटाएं। जब पानी एक तिहाई (१२५ ग्राम) शेष रह जाए, तब उसे उतारकर व मसलकर छानकर १२ ग्राम मिश्री मिलाकर रख लें। इसमें से १-१ चम्मच काढ़ा १-१ घंटे के अंतर से दिन में कई बार पिलाने से बलगम निकल जाता है, जब तक बलगम से छाती साफ न हो, प्रयोग जारी रखें।

गवेषणात्मक "वेदों में कोई लौकिक इतिहास नहीं"

- खुशहालचन्द्र आर्य

वेदों में अनेक पदों से यह भ्रम होता है कि उनमें ऐतिहासिक स्त्री-पुरुषों, ऋषि-मुनियों, नगरों, नदियों, पर्वतों के नाम है। जिन्हें देखकर प्रायः विद्वान् कह देते हैं कि वेदों में लौकिक इतिहास है। पाश्चात्य संस्कृतज्ञ ही नहीं वेदों को स्वतः प्रमाण मानने वाले भारतीय वेद भाष्यकार सायणाचार्य आदि भी वेदों में लौकिक इतिहास को स्वीकार कर लेते हैं। ऐसा वेद के शब्दों को रुढ़ि मान बैठने से होता है। जबकि वास्तव में वे सभी आचार्यों के मत में यौगिक है। कालान्तर में उनके अर्थ विशेष में सीमित हो जाने पर वे रूढ़ होने लगे। वेदों में अनित्य इतिहास अर्थात् किसी व्यक्ति या जाति विशेष का उल्लेख नहीं है। ईश्वरीय ज्ञान का प्रादुर्भाव मानव उत्पत्ति के साथ ही होता है, अतः उसमें मानव इतिहास नहीं हो सकता, क्योंकि इसके पूर्व मानव उत्पत्ति नहीं होने से इतिहास सृजित ही नहीं हुआ था। सृष्टि के आदि में जब ज्ञान का एकमात्र आधार वेद ही था और मनुष्यों के व्यवहार की एकमात्र भाषा वैदिक भाषा थी, वह मनुष्यों द्वारा रखे गये पदार्थों के नाम वैदिक नामों से भिन्न कैसे हो सकते थे?

इस विषय में मनु महाराज लिखतें हैं:-

सर्वेषां तु स नामानि कर्माणि च पृथक्-पृथक्।
वेद शब्देभ्य एवादो पृथक् संस्थाश्च निर्मने॥

(मनु. २/२९)

सृष्टि के आदि में ज्ञान देते समय परमेश्वर ने सब पदार्थों के नाम, कर्म आदि बता दिये। उन्हीं नामों का लोग प्रयोग करने लगे। यौगिक प्रक्रियानुसार वैदिक शब्दों के भिन्न-भिन्न अर्थ हो जाते हैं। इस प्रकार से लोक में नाम आये, लोक से वेद में नहीं गये। वेद का इन ऐतिहासिक व्यक्तियों से कोई सम्बन्ध नहीं है।

वेद में लौकिक इतिहास मानने पर वेद को अनित्य मानना पड़ेगा, इससे ईश्वर में भी पक्षपात की सिद्धि होगी। यौगिक प्रक्रियानुसार अर्थ होने पर वेद का कोई भी शब्द

व्यक्ति या स्थान विशेष का वाचक नहीं रहता। जहाँ ऐसा प्रतीत होता है, वहां प्राकृतिक जगत् के कारण तथा कार्यरुप तत्वों का औपचारिक वा अलंकारिक वर्णन होता है। इस विषय में मीमांसा भाष्यकार शब्द स्थायी लिखते हैं- यह इतिहास जैसा प्रतीत होता है (वास्तव में है नहीं) यदि इतिहास माना जाये तो वेद को सादि अथवा अनित्य मानना पड़ेगा। परन्तु ऐसा नहीं है।

वेदों में लौकिक इतिहास लेशमात्र भी नहीं है - इस तथ्य को स्थापित करने का श्रेय महर्षि दयानन्द सरस्वती को जाता है। वेद में अर्जुन, द्रौपदी, राम, कृष्णा, सीता आदि ऐतिहासिक व्यक्तियों के नाम गंगा, यमुना, सरस्वती आदि नदियों के नाम, अयोध्या नगर आदि नाम अवश्य पाये जाते हैं, परन्तु वेद में इन लौकिक नामों से किंचित मात्र भी सम्बन्ध नहीं है। वेद के सभी शब्द यौगिक है, आदिकाल में संस्कृत के समस्त नामपद यौगिक धातुज माने जाते थे। धात्विक अर्थों के अनुसार प्रकरणानुसार इनका अर्थ भिन्न हो जाता है।

उदाहरणार्थ: **"यो यमुना यजति गोमतीषु"** (ऋ. ४/२२/४) अर्थात् जो वायुद वारा गोमती में होम करता है। **"सरस्वती यां पितरो हवन्ते"** (ऋ. १०/२७/५) अर्थात्- उस सरस्वती को जिसमें पितर हवन करते हैं।

उपर्युक्त ऋग्वेद के दोनों मन्त्रों गोमती और सरस्वती नदियों के नाम नहीं है, अपितु यज्ञ और हवन से सम्बन्ध रखने वाले नाम है। इसलिए स्पष्ट ही वे किरण के बोधक है।

अम्बे, अम्बिकेऽम्बालिके न मा नयति कश्चन।
ससस्त्यश्वकः सुमाद्रिकां काम्पीलवासिनीम्॥

(यजु. २३/१८)

इस मन्त्र में वर्णित अम्बा, अम्बिका और अम्बालिका तीनों महाभारत के काशीराज की कन्याएँ नहीं

है, जिन्हें भीष्म उठा ले गये थे। अपितु यहां अम्बा, अम्बिका और अम्बालिका माता, दादी और परदादी के वाचक है।

वैदिक काल में महाराज मनु के वंशजों ने सरयू नदी के तट पर अयोध्या नगरी का निर्माण किया था, वेद के शब्द से ही उसका नाम रखा था।

"अष्टचक्रानवद्वारा देवानां पूरयोध्या।"

(अर्थ. २०/२/३२.३२)

इस मन्त्र में शरीर को ही देवताओं की नगरी बताया है जिसमें आठ चक्र और नौ द्वार है। **"नवद्वारे पुरे देही"** (गीता) अर्थात् जिसमें देही (आत्मा) निवास करता है। इससे ज्ञात होता है कि वेदादिशास्त्रों में शरीर रुपी नगरी का नाम अयोध्या है। **"कृष्णा याः पुत्रोऽर्जुन"** (अर्थ. २३/.३/२६) वेद के इस मन्त्र में अर्जुन को द्रौपदी (कृष्णा) का पुत्र बताया है।

शतपथ ब्राह्मण के अनुसार "रात्रिर्वै कृष्णा, असावादित्यत्तस्या वत्सौऽर्जुनः" यहां वेद और ब्राह्मण ग्रन्थ दोनों में कृष्णा (द्रौपदी) नाम रात्रि का है और उससे उत्पन्न होने के कारण आदित्य अथवा दिन (अर्जुन) उसका पुत्र है। इस प्रकार यहाँ द्रौपदी (रात्रि) और अर्जुन (दिन) को महाभारत की द्रौपदी और अर्जुन का वाचक नहीं माना जा सकता।

उपर्युक्त प्रमाणों से स्पष्ट है कि वेद में अनित्य इतिहास अर्थात् किसी व्यक्ति या जाति विशेष का उल्लेख नहीं है। जिस वेदार्थ से वेद में लौकिक इतिहास का संकेत मिलेगा वह वेद की मूल भावना का द्योतक होगा। वेद से भिन्न अन्य धार्मिक ग्रन्थों में लौकिक इतिहास, भूगोल पाया जाता है। इसलिए उन्हें ईश्वरीय रचना नहीं कहा जा सकता है। उदाहरणार्थ :-

बाईबल - बाबुल के राजा नबूखुदनजर के राज्य के उन्नीसवें बरस के पांचवे मास सातवीं तिथि में बाबुल के राजा का एक सेवक नबूसर अद्दान जो निज सेना का प्रधान अध्यक्ष था। यरुसलम में आया और हर एक बड़े घर जला दिया। (तौ.रा.प. २५/आ.०८-२०)।

कुरान - जब युसूफ ने अपने बाप से कहा कि ऐ बाप मेरे ! मैने एक स्वप्न देखा। (मं. ३/सि.२२/सू.२२/आ.४-५२) हमने इस कुरान को अरबी में नाजिल किया है, ताकि तुम समझ सको।

दूसरी आयत से लगता है कि खुदा का कुरान का मुख्य उद्देश्य केवल अरबवासियों का सुधार करना था। अरबी भाषा निश्चित रुप से एक देश विशेष की भाषा है। देश-विदेश की भाषा में ईश्वरीय ज्ञान देने से ईश्वर पर पक्षपात का आरोप लग सकता है। परन्तु न्यायकारी परमपिता परमेश्वर ने वेद रुपी ज्ञान संस्कृत भाषा में प्रदान किया जो मूलरुप से सबकी भाषा थी।

बाइबल और कुरान में लौकिक इतिहास के अनेक उदाहरण मिलते हैं। जबकि हम कह सकते हैं कि वेदों में लौकिक इतिहास नहीं है। यहां यह बात सामने की है कि इस लेख में रुढ़ और यौगिक शब्द कई बार आये हैं। इनके क्या अर्थ हैं, यह हमको जानना उचित है। रुढ़ या रूढ़िवाद शब्द का अर्थ है, जैसा शब्द है उसका वैसा ही अर्थ लगा लेना और यौगिक शब्द का अर्थ होता है, उसके आगे-पीछे के प्रकरणानुसार अर्थ लगाना, जिसके काफी अर्थ निकल सकते हैं। वेदों में अधिकतर यौगिक शब्दों का ही प्रयोग हुआ है। उनका भाष्यकारों ने रूढ़ी अर्थ लगा लिया, इसी से अर्थ का अनर्थ हुआ है।

पता - १८०, गोविन्दराम अण्ड संस, महात्मा गांधी रोड, (दो तल्ला), कोलकाता-७०००७

हताशा-निराशा को छोड़,
जोश
उत्साह
उमंग
के साथ लक्ष्य प्राप्ति में
तत्पर लोग
सफलता
पाते हैं

'महर्षि दयानन्द सत्य के ग्रहण और असत्य के त्याग के आदर्श उदाहरण'

वैचारिक

- मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून

महर्षि दयानन्द ने अपनी शिक्षा व विद्या पूरी होने पर वेद व सत्य मान्यताओं व परम्पराओं का प्रचार किया और इसके लिए अन्धविश्वासों, पाखण्ड, फलित ज्योतिष सहित सभी प्रकार की अविद्या व मिथ्या मान्यताओं का खण्डन किया। इसकी प्रेरणा उन्हें अपने विद्या गुरु प्रज्ञाचक्षु दण्डी स्वामी विरजानन्द सरस्वती मथुरा से मिली थी। महर्षि दयानन्द देश भर में घूम कर अविद्या का नाश करने और विद्या की उन्नति करने हेतु वेदों का प्रचार करते थे। वह बंगाल पहुंते चो वहां उन्हें ब्रह्म समाज के नेता श्री केशवचन्द्र सेन ने अपने उपदेशों और व्याख्यानों में संस्कृत के स्थान पर आर्य भाषा हिन्दी को अपनाने की प्रेरणा की। महर्षि दयानन्द इन दिनों वस्त्र धारण न कर कौपीन मात्र धारण करते थे। श्री केशव चन्द्र सेन ने स्वामी जी को वस्त्र धारण करने का सुझव दिया, जिसे उन्होंने सहर्ष स्वीकार कर लिया। यद्यपि उन्हें वस्त्र धारण करने की इच्छा व आवश्यकतानुसार नहीं थी, परन्तु उन्हें भ्रमण करते हुए स्त्री-पुरुषों से युक्त मनुष्य समुदाय के सम्पर्क में आना पड़ता था। सम्भव था कि यदा-कदा वा अनजाने में कोई महिला भी उनसे वार्तालाप, अध्ययन व व्याख्यान में आ सकती थीं। अतः मर्यादाओं को ध्यान में रखते हे उन्होंने ब्रह्म नेता सेन महाशय का यह सुझाव भी तत्काल स्वीकार कर लिया।

समय व्यतीत होता रहा और महर्षि दयानन्द काशी में प्रचार कर रहे थे। वहां डिपुटी कलेक्टर राजा जयकृष्ण दास आपके भक्त, अनुयायी व सहयोगी बन गये। आपने स्वामी जी को सुझाव दिया कि आपके श्रीमुख से उत्तम प्रवचन व व्याख्यान प्रस्तुत किये जाते हैं। आपके विचारों वा प्रवचनों से वही लोग लाभान्वित होते व हो सकते हैं जो कि उसमें उपस्थित होते हैं। जो लोग लाभान्वित होना चाहें, परन्तु किन्हीं कारणों से वहां न आ सकें, उन्हें आपके विचारों को जानने का लाभ प्राप्त नहीं हो पाता। कालान्तर में जब आप नहीं रहेंगे तब भी आपके विचार, मान्यताओं व वैदिक सिद्धान्तों से समकालिक व आने वाली सन्ततियां वैदिक ज्ञान से वंचित रहेंगी। यदि आप अपने विचारों, मान्यताओं व सिद्धान्तों का एक विस्तृत ग्रन्थ लिख दें तो इन सभी समस्याओं का निदान हो जायेगा। महर्षि दयानन्द इस उत्तम प्रस्ताव को सुनकर प्रसन्न हुए और उसे उन्होंने तत्काल स्वीकार कर लिया। अनुमान है कि उसके तीन. माह के अन्दर ही सन् १८७४ में आदिम सत्यार्थ प्रकाश ग्रन्थ तैयार कर दिया। यह सत्यार्थ प्रकाश का प्रथम संस्करण था। आपने कुछ समय पहले ही आर्यभाषा हिन्दी सीखना आरम्भ किया था। अतः भाषा के परिमार्जन की आवश्यकता थी। स्वामी जी ने जिन लेखकों को बोलकर यह ग्रन्थ लिखाया था, वह पौराणिक विचारों के थे। अतः पौराणिक मनोवृत्ति के कारण उन्होने सत्यार्थ प्रकाश में आपके आशय के विपरीत कुछ वचन डाल दिये थे, जिनका सुधार व परिमार्जन अपेक्षित था। अतः ऋषि दयानन्द ने मृत्यु से पूर्व सन् १८८३ में सत्यार्थ प्रकाश का संशोधित संस्करण तैयार कर दिया जो उनकी मृत्यु के समय मुद्रणाधीन था। ३० अक्टूबर १८८३ को स्वामी की मृत्यु हो जाने पर यह ग्रन्थरत्न सन् १८८४ में प्रकाशित हुआ। अतः सत्यार्थ प्रकाश जैसे ग्रन्थ के लेखन की प्रेरणा भी उन्हें अपने भक्त व प्रशंसक राजा जयकृष्ण दास मुरादाबाद से वाराणसी में मिली थी, जिसे उन्होंने सहर्ष व सधन्यवाद स्वीकार किया था।

आर्यसमाज की स्थापना की प्रेरणा व प्रस्ताव महर्षि दयानन्द जी को मुम्बई में उनके अनेक भक्तों से मिला था। महर्षि दयानन्द को यह प्रस्ताव पसन्द आया था, परन्तु उन्होंने वहां के लोगों को सावधान कर दिया था कि यदि आप आर्यसमाज के संचालन में सतर्क व सावधान नहीं रहे तो आगे चलकर गड़बड़ घोटाला हो सकता है। महर्षि दयानन्द ने मुम्बई में १० अप्रैल १८७५ को आर्यसमाज की स्थापना तो कर दी और उसके बाद आर्यसमाज ने अनेक अभूतपूर्व कार्य भी किये। उनके आरम्भ में किये गये कार्य आज भी जारी है, परन्तु आर्यसमाज का जो स्वरुप होना था वह आज देखने को नहीं मिल रहा है। आज आर्यसमाजों में वह व्यवस्थायें देखने को नहीं मिलती जिन्हें हम आदर्श व्यवस्थायें कहते हैं जबकि अन्य अनेक संस्थायें हमसे कहीं आगे चल रही हैं। ऐसी स्थिति में अन्य क्या सोचते हैं, यह जानना तो कठिन है, परन्तु आर्यसमाज के सदस्य व ऋषि भक्त भी आर्यसमाज व इसकी आंतरिक सभाओं के क्रियाकलापों से पूर्णतया सन्तुष्ट नहीं अपितु दुःखी अवश्य हैं। लोकैषणा, स्वार्थ और पदलोलुपता के आन्तरिक शत्रुओं ने आर्यसमाज को भारी हानि पहुंचाई है और स्थिति वर्तमान में भी दुर्भाग्यपूर्ण है। इससे लगते है कि ऋषि की आर्यसमाज की स्थापना के अवसर पर दी गई चेतावनी सत्य सिद्ध हो रही है। यहां हमारा उद्देश्य यह बताना था कि आर्यसमाज की स्थापना भी ऋषि ने अपने सच्चे भक्तों के आग्रह पर उनके सहयोग से की थी।

सत्यार्थ प्रकाश की रचना के बाद महर्षि दयानन्द ने ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका सहित यजुर्वेद एवं ऋग्वेदभाष्य (सातवें मण्डल के अनेक सूक्तों तक), संस्कार विधि, आर्याभिविनय न अनेक लघु ग्रन्थों की रचनायें की। यह लेखन कार्य इनके महत्व व आवश्यकता को देखकर कुछ उद्देश्यों की पूर्ति के लिए स्व-विवेक से सम्पन्न किये गये। इसके लिए महर्षि स्वयं सावधान थे, अतः इसके लिए उन्हें किसी व्यक्ति विशेष का कोई ऐसा प्रस्ताव नहीं मिला जैसा कि सत्यार्थप्रकाश के लेखन के लिए मिला था।

महर्षि दयानन्द जी का एक मुख्य कार्य अपने वर्चस्व की उत्तराधिकारिणी सभा, परोपकारिणी सभा की स्थापना का था। इसे महर्षि दयानन्द ने अपनी मृत्यु से कुछ समय पूर्व उदयपुर में सम्पन्न किया था। यह उनकी अपनी मृत्यु विषयक निजी अनुभूतियों का परिणाम था। ऐसा प्रतीत होता है कि उन्हें यह आभास हो गया था कि वह जो वेद प्रचार और अन्य मतों की मिथ्या मान्यताओं व अन्धविश्वासों की समीक्षा एवं खण्डन-मण्डन करते हैं, उसका अपने जीवन के प्रति घातक परिणाम हो सकता है। ऐसी स्थिति में किसी प्रकार का कोई विवाद न हो, और उनके बाद भी उनके द्वारा स्थापित वा आरम्भ वेद प्रचार का कार्य सुचारु रुप से चलता रहे, इस पर विचार कर रही उन्होंने परोपकारिणी सभा की स्थापना की थी। महर्षि दयानन्द जी की मृत्यु वा महाप्रस्थान अजमेर में होने के कारण इस सभा का मुख्यालय वहीं बनाया गया जो आज भी सक्रिय रहकर अपने उद्देश्यों की पूर्ति में लगा हुआ है। यह कार्य भी उन्होंने स्वविवेक से किया जिससे आर्यसमाज को बहुत लाभ हुआ। यदि परोपकारिणी सभा की स्थापना न हुई होती तो आर्यसमाज के सामने कठिनाईयां आ सकती थीं।

महर्षि दयानन्द जी अपने वैदिक सिद्धान्तों व विचारों के पक्के थे। यदि उनका कोई भक्त व अनुयायी उनके हित का कोई प्रस्ताव करता था जिससे उनके जीवन को हानि की आशंका होती थी, तो वह अपने अनुयायियों द्वारा किसी स्थान विशेष की यात्रा न करने के सुझाव को स्वीकार नहीं करते थे। ऐसा ही जोधपुर में वैदिक धर्म के प्रचार के लिए जाते समय हुआ था। उनके भक्त शाहपुरा रियासत के आर्य नरेश नाहरसिंह जी व अन्य कुछ भक्तों को स्वामी जी के जोधपुर जाने पर उनके जीवन को हानि होने की आशंका थी। उन्होंने स्वामी जी को यात्रा न करने वा वहां के लोगों से सावधान रहने व प्रचार में संयम बरतने का सुझाव दिया था। स्वामी जी ने यात्रा न करने का सुझाव स्वीकार नहीं किया और अपने अनुयायियों को कहा कि यदि लोग उनकी उंगिलयों को बत्तियों की तरह जला भी दे तो भी वह सत्य को प्रकट करने से न चूकेंगे। जोधपुर प्रवास में जिस बात की आशंका थी वही हुई। जोधपुर में उन्हें विष दिया गया जिसके परिणामस्वरुप वह रुग्ण हो गये। उनके उपचार में भी अनियमिततायें हुई। एक ऐसे चिकित्सक

अलीमर्दन ने उनका उपचार किया जो अनुमानतः उनके प्रति द्वेष रखता था। स्वामी जी को विष दिये जाने के पीछे किसी बड़े राजनीतिक षड़यन्त्र होने की सम्भावना से भी इंकार नहीं किया जा सकता। इसका कारण था कि वह देश की आजादी के समर्थक थे। उन्होंने अपने सत्यार्थप्रकाश व आर्याभिविनय आदि ग्रन्थों में विदेशी सरकार के विरोध में विचार प्रकट किये थे। वह जोधपुर महाराजा की वैश्यावृत्ति आदि अन्य मिथ्याचार के भी घोर आलोचक थे और उसका कठोर शब्दों में खण्डन करते थे। अतः उनके जीवन को नष्ट करने के किसी बड़े षड़यंत्र की सम्भावना से इंकार नहीं किया जा सकता। जो भी हो, जोधपुर में उन्हें विष दिया गया, उपचार में गड़बड़ी हुई जिसके कारण ३० अक्टूबर सन् १८८३ को अजमेर में दीपावली के दिन उन्होंने अपनी इच्छा से ईश्वरोपासना करते हुे प्राणायामपूर्वक श्वास छोड़ दिया और ब्रह्मलोक वा मोक्ष को प्राप्त हो गये।

स्वामी दयानन्द जी उच्च कोटि के योगी और महाभारत के बाद वेदों के असाधारण व अपूर्व विद्वान थे। उनका जीवन सत्य के ग्रहण करने का सर्वोत्तम उदाहरण हैं। उन्होंने उन्हें दिये जाने वाली किसी अच्छे प्रस्ताव की उपेक्षा नहीं की, अपितु उन्हें स्वीकार कर सत्य के ग्रहण का प्रेरणापद उदाहरण प्रस्तुत किया। उनका स्थापित किया आर्यसमाज अपनी आरम्भिक व उसके कुछ वर्षं के बाद के यश व कीर्ति को अक्षुण्ण नहीं रख पा रहा है। ईश्वर कृपा करे कि महर्षि दयानन्द का स्थापित किया आर्यसमाज देश व संसार की आदर्श संस्था बन सके और उनके स्वप्न साकार हो। इसके लिए ऋषि के जीवन से प्रेरणा लेकर निजी लोकैषणा व स्वार्थों का त्याग करना होगा जो असम्भव तो नहीं परन्तु कठिन अवश्य है।

पता : ११६, चुक्खूवाला-२, देहरादून-२४८००१

धिया चक्रे वरेण्यो।

- यजुर्वेद

बुद्धिपूर्वक कर्म करने वाला ही लोगों के द्वारा वरण करने योग्य होता है।

-: कविता :-

"मैं हूँ दयानन्द"

मैं हूँ दयानन्द ! सदा सत्य कहता हूँ।
वैदिक धर्म के खातिर ही जीता हूँ मरता हूँ ॥१॥
पाखण्डों को जड़ से मिटा दूंगा।
भारत राष्ट्र को स्वर्ग बना दूंगा॥
मृत्यु से मैं डरता नहीं हूं।
ईश्वर को कभी भूलता नहीं हूँ॥
मैं भारत माँ के दुःखों को हरता हूँ।
वैदिक धर्म के खातिर ही जीता हूँ मरता हूँ ॥२॥
विदेशी सत्ता हमें स्वीकार नहीं।
जहाँ देव पुरुष होते वहां भ्रष्टाचार नहीं।
असली शिव को स्वीकार करूंगा।
सर्वत्र वेदों का प्रचार करुंगा॥
मैं स्वामी विरजानन्द का शिष्य हूँ।
भटके लोगों का उद्धार करुंगा॥
मैं दुश्मनों से कभी नहीं डरता हूँ।
वैदिक धर्म के खातिर ही जीता हूँ मरता हूँ ॥३॥
वेद परमात्मा की वाणी है।
ज्ञान-तत्व ऋषियों की निशानी है॥
वेद सदा से है और सदा ही रहेंगे।
वेद कभी भी लुप्त नहीं होंगे॥
जो वेदों के मार्ग पर चलते हैं।
वे लोग मोक्ष प्राप्त करते हैं॥
दयानन्द की बातें जो मानते हैं।
वे ही अपने को जानते हैं॥
मैं हूँ वेदों का पुजारी नित्य संध्या करता हूँ।
वैदिक धर्म के खातिर ही जीता हूँ मरता हूँ ॥४॥

००-००

- शेष अगले अंक में

रचयिता : डॉ. रवीन्द्र कुमार शास्त्री,
गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ फरीदाबाद (हरियाणा)

विचारात्मक प्रतिदिन यज्ञ करते हुए भी प्रायः लोगों को लाभ क्यों नहीं होता ?

– आचार्य आर्यनरेश,
वैदिक गवेषक

'महर्षि देव दयानन्द सरस्वती' वर्तमान युग के प्रथम ऐसे वैज्ञानिक थे, जिन्होंने आज से लगभग १२५ वर्ष पूर्व यज्ञ हवन को वेद की छाया में संसार के सभी जड़ व चेतन पदार्थों हेतु सर्वाधिक लाभकारी वैज्ञानिक सुकर्म कहा । स्व. कालजयी क्रान्तिकारी ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश के ३ समु. में यज्ञ पर शंकर के उत्तर में लिखते हैं कि यदि तुम **'पदार्थ विद्या'** जानते तो कभी यज्ञ का विरोध न करते । पदार्थ विद्या से अभिप्राय उन रासायनिक क्रियाओं से है जिसका अध्ययन कैमिस्ट्री इक्वेशनों के द्वारा किया जाता है । कहने का मूल अभिप्राय यह है कि **'वैदिक यज्ञ'** एक वैज्ञानिक क्रिया है । इसके द्वारा पूर्ण-लाभ अथवा शीघ्र लाभ तभी हो सकता है, जब हम इसे ठीक उसी प्रकार से करें जैसे कि देव दयानन्दादि ऋषियों ने वेद व शास्त्र के अनुसार इसका निर्देश किया है । यदि हम इसे अपनी मनचाही इच्छा से एवं मनचाहे साधनों एवं विधि से करते हैं तो इससे हानि होती है, लाभ कम होता है अथवा होता ही नहीं । इसके मुख्य कारण निम्नलिखित है

(१) सबसे बड़ी त्रुटि गलत माप ऋषि आज्ञा से विरुद्ध हवनकुण्ड का चयन । देव दयानन्द सरस्वती संस्कार विधि व सत्यार्थ प्रकाश में हवन कुण्ड का परिमाण लिखते हुए संकते करते हैं कि जितना ऊपर से चौड़ा, उतना ही गहरा एवं उस चौड़ाई से चौथाई भाग पेंदे वाला । अर्थात् यदि ऊपर से १२" इंच है, तो गहरा १२" व पेंदें में ३"x ३" होना चाहिए। 12X6X4 तर्क विज्ञान शील बुद्धिजीवी आर्यों को अपना कोई भी कार्य शास्त्र विरुद्ध न करना चाहिए । कुण्ड जितनी अच्छी धातु का होगा उतना अधिक लाभ होगा । पहले प्रकार के ऋषि निर्दिष्ट कुण्ड में जड़ीबूटियों को वाष्प रुप में लाने हेतु ज्वलन क्रिया में भीतर ६००° से ऊपर १३००° तक तापमान पहुंच जाता है । जिससे प्रत्येक पदार्थ कम्बश्चन क्रिया द्वारा उचित लाभ पहुंचाता है । ऐसे कुण्ड में लाभ पूर्ण लेने हेतु छिद्र करने की कभी भूल न करनी चाहिए। छिद्र करने से ताप मान कम हो सकता है तथा कुण्ड शीघ्र टूट जाता है एवं सामग्री व घृत बाहर भी गिर जाते हैं । जो लोग जलने की सुविधा हेतु छिद्र करने की बात करते हैं वह नितान्त तर्कहीन व गलत है, क्योंकि जब कुण्ड घरों व समाज भवनों की यज्ञशालाओं में धरती के भीतर बनता है तब भी तो अग्नि बहुत अच्छी प्रकार से जलती है । अपितु धरती वाला कुण्ड अधिक लाभकारी होता है, क्योंकि उसमें आहुत की गई विभिन्न रोगनाशक प्राकृतिक जड़ी-बूटियां सूक्ष्म होकर घर के नीचे वाली भूमि को भी स्वस्थ रखती है, जिससे इससे दीमक आदि का भी भय नहीं रहता । आजकल दीमक का उपचार करने वाले जहां जानलेवा रासायनिक औषधियों को खिड़की, किवाड़ों व अलमारियों में लगाते हैं वहां इसके साथ-साथ भवन के चारों ओर की धरती में भी लगाते हैं । यदि आप के पास अपना घर है अथवा बनाने जा रहे हैं तो यज्ञ कुण्ड धरती में ही तीन मेखला वाला बनायें । पक्का हवन कुण्ड आपकी पक्की ईश्वर वेद व ऋषि भक्ति का भी परिचायक है । यह आपके परिवार को आपके पश्चात् भी पक्का ईश-वेद भक्त बनने की व दैनिक यज्ञ के करने की प्रेरणा देकर 'आर्य' बनाए रखेगा । यदि आपके पीछे पुत्र-पुत्रवधु व पौत्र आलस्यवशात् छोड़ भी देंगे तो आने वाले आर्यातिथिजन उन्हें आप द्वारा बनाए गए कुण्ड को स्मरण करवा कर पुनः परिवार सहित मिलकर संध्या हवन व वेदपाठ करने की प्रेरणा देगा ।

पता : उद्गीथ साधना स्थली, आर्य शिखर, वेद सदन, ओमवन महर्षि दयानन्द मार्ग, हिमाचल प्रदेश-१७३१०१

"सफलता"

- आचार्य कर्मवीर शास्त्री

रुस में एक मशहूर लेखक हुए हैं इतने बड़े कि सारी दुनियां उन्हें जानती है। उनका नाम था - "लियो टालस्टाय" पर हमारे देश में महर्षि टालस्टाय का सम्मान दिया गया। उन्होने ढेर सारी किताबें लिखी हैं इन किताबों में बड़ी अच्छी अच्छी बातें हैं। उनकी कहानियाँ बड़ी मर्मस्पर्शी हुआ करती है। एक से एक बढ़िया हैं उन्हें पढ़ते पढ़ते जी नहीं भरता। इन्हीं टालस्टाय की कहानी है - आदामी को कितनी जमीन चाहिए ? इस कहानी में उन्होंने यह नहीं बताया कि हर आदमी को अपनी गुजर बसर के लिए कितनी जमीन की जरुरत है। उन्होंने तो दूसरी ही बात कही है। वह कहते हैं कि आदमी ज्यादा से ज्यादा जमीन पाने के लिए कोशिश करता है उसके लिए हैरान होता है, भाग दौड़ करता है पर आखिर में कितनी जमीन उसके काम आती है ? कुल छः फूट जिसमें वह हमेशा के लिए सो जाता है। यूँ कहने के लिए यह कहानी है पर इसमें पते की दो बात कही गई है। पहली यह कि आदमी की इच्छाएँ कभी पूरी नहीं होती। जैसे जैसे आदमी उनका गुलाम बनता जाता है वे और बढ़ती जाती है। दूसरी आदमी आपाधापी करता है भटकता है, पर अन्त में उसके साथ कुछ भी नहीं जाता। आपको शायद मालूम न हो यह कहानी गांधी जी को इतनी पसंद आई कि उन्होंने इसका गुजराती में अनुवाद किया। हजारों कापियाँ छपी और लोगों के हाथों में पहुंची। धरती के लालच में भागते भागते जब आदमी मरता है तो कहानी पढ़ने वालों की आँखें गीली हो जाती है उनका दिल कह उठता है **"ऐसा धन किस काम का।"**

अपनी इस कहानी में टालस्टाय ने जो बात कही है ठीक वही बात हमारे साधु-सन्तों और त्यागी-महात्मा सदा से कहते आए हैं। उन्होंने कहा कि यह दुनिया एक मायाजाल है। जो इसमें फंसा कि फिर निकल नहीं पाता। शास्त्रों में धन-दौलत को चंचला कहा है। वे कहते हैं - पैसा किसी के पास नहीं टिकता। जो राजा है वही कल को भिखारी बन जाता है। आदमी इस दुनिया में खाली हाथ आता है खाली हाथ जाता है किसी ने कहा है न

आया था यहां सिकन्दर दुनिया से ले गया क्या।
थे दोनों हाथ खाली बाहर कफन से निकले ॥

सन्त कबीर ने यही बात दूसरे ढंग से कही है -

कबीर सो धन संचिए जो आगे कू होई।
सीस चढ़ाए पोटली जात न देखा कोई ॥

उर्दू के मशहूर कवि नजीर ने कहा है वह तो बच्चे बच्चे की जबान पर है - **सब ठाठ पड़ा रह जाएगा, जब लाद चलेगा बंजारा।**

आप कहेंगे वाह जी वाह आपने तो इतनी बातें कह डाली पर मैं पूछता हूं कि बिना धन के किसका काम चलता है। साधु सन्तों की बात छोड़ दीजिए लेकिन जिसके घर बार है उसे खाने को अन्न चाहिए, पहनने को कपड़े और रहने को मकान चाहिए। इसके अलावा पढ़ाई-लिखाई हारी-बिमारी आदि बीसियों बातों के लिए पैसा चाहिए और आप क्या जानते नहीं जिसके पास पैसे है उसी की लोग इज्जत करते हैं, गरीब को कोई नहीं पूछता। आपकी बात में सच्चाई है पर एक बात बताइए - आप रोटी खाते हैं ? जी हां सभी खाते हैं। किसलिए ? पेट भरने के लिए। जानवर खाते हैं ? जी हाँ किसलिए ? पेट भरने के लिए ठीक। अब मुझे यह बताइए कि जब आदमी और जानवर दोनों पेट भरने के लिए खाते हैं तो फिर दोनों में अन्तर क्या रहा ? यह भी आपने खूब कही। साहब, आदमी आदमी है जानवर जानवर है यह तो मैं

भी मानता हूँ पर मेरा सवाल तो यह है कि उन दोनों में अन्तर क्या है ? अन्तर ! अन्तर यह है कि जानवर खाने के लिए जीता है और आदमी जीने के लिए खाता है। वाह, आपने तो मेरे मन की ही बात कह दी। यही तो मैं कहना चाहता था जब आदमी जीने के लिए खाता है तब उसके जीवन का कोई उद्देश्य भी होना चाहिए सच यह है कि वह उद्देश्य धन कमाना नहीं हो सकता। धन कमाने का मतलब होता है पेट के लिए जीना और जो पेट के लिए जीता है उसका पेट कभी नहीं भरता। आदमी तिजोरी में भरी जगह को नहीं देखता। उसकी निगाह खाली जगह पर रहती है। इसी को निन्यानबे का फेर कहते है। स्वामी रामतीर्थ ने एक बड़ी सुन्दर कहानी लिखा है। एक धनी आधमी था। वह और उसकी स्त्री, दोनों हर घड़ी परेशान रहते थे और अक्सर आपस में लड़ते रहते थे। उनका पड़ोसी गरीब था, दिन भर मजदूरी करता था औरत घर का काम करती थी। रात को दोनों चैन की नींद सोते थे। एक दिन धनी की स्त्री ने कहा - "इन पड़ोसियों को देखो, कैसे चैन से रहते हैं। आदमी ने कहा - ठीक कहती हो।"

अगले दिन उसने किया क्या कि पोटली में निन्यानबे रुपये बांधे और उसे गरीब पड़ोसी के घर डाल दिया। पड़ोसी ने रुपये देखे। उसकी आँखे चमक उठी। उसी घड़ी लोभ ने उसे धर दबोचा। वह निन्यानबे के सौ और सौ के एक सौ एक करने में लग गया। फिर क्या था! उसकी नींद हराम हो गई सुख भाग गया। मेहनत की खरी कमाई का आनन्द सपना हो गया। हममें से ज्यादा तर लोग ऐसे ही चक्कर में पड़े हैं। हम यह भूल जाते हैं कि इस चक्कर में कहीं सुख है तो वह नकली है। सुख से अधिक दुख है। असल में पैसा अपने आपमें बुरा नहीं है। बुरा है उसका मोह। बुरा है उसका संग्रह। रोजी पाने का अधिकार सबको है, पर जोड़ जोड़कर रखने का अधिकार किसी को भी नहीं है।

आचार्य विनोबा ने बड़ी सुन्दरता से यह बात कही हैं कि धन को धारण करने पर वह निर्धन का कारण बन जाता है इसीलिए शास्त्रों में धन को द्रव्य कहा गया है, जब धन बहने लगता है तभी वह द्रव्य बनता है, द्रव्य बनने पर धनधान्य बन जाता है। सच्चा धन मनुष्य है इसलिए उसकी खोज उसके हृदय में होगी। यह धन जिस समाज के पास है वह मालामाल है।

- नन्दिनी माईन्स, भिलाई (छ.ग.)

एतद् त्रयं प्रसरति

वार्त्ता च कौतुकवती विमला च विद्या, लोकोत्तरं परिमलश्च कुरङ्गनाभेः ।
तैलस्य बिन्दुरिव वारिणि दुर्निवार-मेतद् त्रयं प्रसरति स्वयमेव भूमौ ।। (माघ)

भावार्थ - दुनियाँ बड़ी अजीब है। जन-समाज के सामने कोई भी बात बिना पहुंचे नहीं रहती। चाहे अच्छी हो या बुरी? पहुंच अवश्य जाती है। महाकवि माघ ने कितने सुन्दर शब्दों में इसका चित्र खींचा है - कोई भी कौतुकमयी चर्चा हो (जैसे किसी के घर में एक साथ दो बच्चे जन्में हों, किसी व्यापारी का दिवाला निकल गया हो) चाहे वह लाख छिपाने का प्रयत्न आप कीजिए छिप नहीं सकती। इसी तरह विद्या का है कि - यदि मनुष्य के पास सच में ही श्रेष्ठ विद्या है, ज्ञान है, कोई चाहे या न चाहे अथवा लाख बार उसके ज्ञान पर पर्दा डालने चाहे परन्तु वह तो फैलेगा ही। विद्या तो सूर्य के प्रकाश की तरह है क्या संसार का कोई भी अन्धकार प्रचण्ड रवि की रश्मियों को छू सकता है ? कदापि नहीं। यही दशा कस्तूरी की है। कस्तूरी की अद्वितीय लोकोत्तर सौरभ, सुगन्ध क्या कभी रुक सकती है ? वह तो फैलेगी ही। आप चाहें कहीं उसे क्यों न रख दें ? वह तो अपना गुण बिना किसी के कहे ही बताएगी। किसी को यह कहने की आवश्यकता ही नहीं पड़ेगी कि यह कस्तूरी है। कवि माघ कहते हैं कि - जिस प्रकार जल में तैल की बूंद स्वयमेव फैलती है, उसे रोकने का सामर्थ्य किसी में नहीं है, तथेव उपर्युक्त तीनों वस्तुएँ स्वतः ही फैलती हैं। इनके विज्ञापन अथवा प्रचार की किसी को आवश्यकता नहीं है।

- सुभाषित सौरभ

क्या हमारे लिए दूसरा व्यक्ति अग्निहोत्र आदि कर सकता है ? पिछले अंक का शेष

अब प्रश्न उठता है जो स्वयं करने में असमर्थ है

किसी भी कारण से समय अभाव, छोटा घर, स्थान अभाव, दूसरों का विरोध, स्वास्थ्य की प्रतिकूलता अथवा अन्य किसी भी कारण से जो स्वयं कर नहीं पाते है। तो क्या दूसरा करे अर्थात् हम धन दान देकर दूसरों से अग्निहोत्र आदि करवाएँ तो क्या हमें पुण्य मिलेगा ??? जी हाँ, आपको अवश्य पुण्य मिलेगा । यह हम नहीं कह रहे हैं, यह बात प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द प्रमाण से ऋषियों के द्वारा सिद्ध है। इस विषय में भ्रान्तिरहित सुस्पष्ट बोध के लिए कर्मफल के कुछ प्रमुख सिद्धान्तों को जानना आवश्यक है। विस्तार के भय से यहाँ संक्षेप में लिखते हैं -

(१) जिन कर्मों को हम स्वयं करते हैं उनका फल तो हमें ही मिलेगा इसमें किसी आर्य जन को संदेह नहीं है । जो कर्म हम स्वयं नहीं करते है, दूसरों से करवाते है, उन कर्मों का भी फल हमें मिलता है। जो हमने नहीं किया, न ही करवाया, परन्तु अनुमोदन किया (शरीर से पीठ थपथपाया/वाणी से शाबासी दी/मन में समर्थ किया ऐसी ही होना चाहिए, अच्छा किया आदि) उसका भी फल हमें मिलेगा। इनके उदाहरण क्रमशः दिये जाएँगे।

(प्रमाणः- **वितर्का हिंसादयः कृतकारितानुमोदिता लोभक्रोधमोहपूर्वका मृदुमध्याधिमात्रा दुःखाज्ञानानन्तफला इति प्रतिपक्षभावनम्** । योग दर्शन २-३४)

(२) इसी विषय में एक दूसरा प्रमाण प्रस्तुत करते हैं -

अनुमन्ता विशसिता निहन्ता क्रयविक्रयी ।
संस्कर्ता चोपहर्ता च खादकश्चेति घातकाः ॥

मनुस्मृति ५-५१

१. मारने की आज्ञा देने वाला २. मांस को काटने वाला ३. प्राणी को मारने वाला ४. हत्या के लिए खरीदने वाला ५. बेचने वाला ६. पकाने वाला ७. परोसने वाला ८. खाने वाले ये सब हत्यारे और पापी होते हैं। इस प्रकार पुण्य कर्म में भी समझना चाहिए।

(३) अग्निहोत्र के लिए भी साक्षात् प्रमाण उपलब्ध है -

विद्वद् वरेण्य योगिराज महर्षि देव दयानन्द जी संस्कार विधि ग्रन्थ में गृहाश्रम प्रकरण अन्तर्गत - **"अथाग्निहोत्रम्"** सायं-प्रातः .... दोनों स्त्री-पुरुष अग्निहोत्र भी दोनों समय में नित्य किया करें। किसी विशेष कारण से स्त्री वा पुरुष अग्निहोत्र के समय दोनों साथ उपस्थित न हो सकें तो एक ही अकेली स्त्री वा पुरुष दोनों की ओर का कृत्य कर लेवें एक एक मन्त्र को दो दो बार पढ़के आहुति करें। स्त्री पुरुष तो उपलक्षणमात्र है। कर्म का फल स्वयं को ही मिलता है अपने आप ठीक है, लेकिन उस एक मुख कर्म के साथ अनेक सहायक कर्म भी तो जुड़े हुए हैं, उन सभी सहायक कर्मों को न देखना केवल आहुति देने को ही कर्म कहना जड़बुद्धि या काणे पुरुष के समान है। यदि कोई कहे स्वयं ही अग्निहोत्र करना चाहिए दूसरों की सहायता से नहीं तो शास्त्र की रीति से यदि विवेचना की जाए स्वयं बिना अन्यों की सहायता अर्थ यह होगा कि -

यजमान स्वयं जंगल जाएं, जो वृक्ष या डालियां अपने आप गिर चुकी है, उन्हीं समिधाओं का चयन करें (खरीदने में तो दूसरों की सहायता आ जाएगी आप के मत में यजमान को फल नहीं मिलेगा और माचिसः अग्निपेटि भी दूसरों से बनी है) स्वयं अरणी मन्थन करें (नीचे एक काष्ठ फटा के ऊपर एक काष्ठ दण्डा खड़ा करके दही बिलौने के समान मथना=घुमाना, जिस के घर्षण से अग्नि पैदा हो जाती है उसको अरणी मन्थन कहते हैं) पुनः उस अग्नि को शुष्क नारियल छिलके आदि से अधिक प्रज्वलित करके अग्निहोत्र के लिए यज्ञकुण्ड में स्थापन करें। उस अग्नि को राख से ढक कर सुरक्षित रखें, प्रतिदिन उसी में अग्निहोत्र करें। बुझ जाए तो पुनः स्वयं अरणी मन्थन करें। स्वयं घर में गाय पालन करें, स्वयं घास-चारा उगाएं-काटें-गाय को खिलाएं, स्वयं दूध दोहें, दही जमाएं-मक्खन निकालें - गरम करें घी बनावें फिर अग्निहोत्र करें। इस स्वयं को और

व्यापक करें तो जिस पात्र में दूध दोहना, आज्यास्थली (घृत पात्र) स्रुवा और यज्ञीय वस्त्र ये सब भी स्वयं बनायें। क्योंकि ये सब भी यज्ञ की सहयोगी वस्तुएँ हैं, इनके बिना आप यज्ञ नहीं कर सकते हैं, और जो अज्ञानी यह मानते हैं दूसरे से करवाये तो अपने को पुण्य नहीं मिलेगा, तो ये सब करके दिखाएँ।

(४) प्रश्न : क्या स्वयं अग्निहोत्र करने से जितना पुण्य मिलेगा दूसरों से करवाने पर भी उतना ही पुण्य मिलेगा ?

उत्तर :- जैसे आप अपने घर में किसी साधु महात्मा को बुलाएं और स्वयं उनको भोजन परोसते हैं तो आपकी श्रद्धा कुछ अधिक होती है और परोसना भी एक कर्म है उसका फल थोड़ा अधिक मिलेगा, और जो दूसरों को परोसने के लिए कहता है उसके पुण्य में बहुत थोड़ा अन्तर पड़ेगा। यह बात सभी जानते हैं - घर में विवाह आदि संस्कार अथवा अन्य कोई निमित्त उपस्थित होने पर अथवा संस्थाओं में वार्षिकोत्सव मेले आदि में जो भण्डारा ऋषिलंगर प्रीति भोजन की व्यवस्था की जाती है, उसमें न पाचक को, न परोसने वालों को पुण्य मिलता है। उनको तो हम पैसे देकर कुछ काल के लिए खरीदते हैं। हां कोई निःशुल्क सेवा करता है तो उसे पकाने या परोसने कर्म का फल मिलेगा व सेवा भावना में वृद्धि होगी, फिर भी भोजन दान का पुण्य तो धन दाता को ही मिलेगा। वैसे ही धन दाता को ही अग्निहोत्र का पुण्य मिलेगा स्वयं करें तो बहुत अच्छा है, नहीं कर पाते तो दूसरों से करवाने पर भी पुण्य मिलेगा, दूसरा आप के लिए अग्नि देवता को हवि द्रव्य परोसेगा उसमें कोई चिन्ता की बात नहीं है।

(५) इसका और एक प्रत्यक्ष दृष्टान्त देता हूँ। महर्षि देव दयानन्द द्वारा प्रतिष्ठापित परोपकारिणी सभा जिस में सर्वाधिक ऋषिभक्त वैदिक विद्वान सदस्य हैं। वहां "अतिथि यज्ञ के होता" एक अनुपम प्रकल्प चल रहा है उस के अन्तर्गत देशभर के सैकड़ों व्यक्ति अपने घर बैठे बैठे अतिथि यज्ञ का पुण्य प्राप्त कर रहे हैं। और यह सभी विद्वानों के द्वारा सम्मत है।

(६) वैसे ही आज नगरों में क्या ग्रामों में भी गौ-माता का पालन करने की अनुकूलता लोगों को नहीं है। उस कारण धार्मिक श्रद्धालु जन जो **बलिवैश्वदेव यज्ञ** को अपना कर्त्तव्य समझते हैं, वे लोग गोशाला, पक्षी-घर (जहां पक्षियों के लिए दाने डाले जाते हैं, पानी पीने की व्यवस्था होती है) वहां दान देकर पुण्य प्राप्त करते हैं।

(७) आजकल पति-पत्नी दोनों नौकरी/व्यवसाय करते हैं। विदेश में और देश में भी बड़े नगरों में पास-पड़ोस से कोई सम्बन्ध नहीं रहता है। तो माता-पिता दिनभर घर में अकेला रहना पसन्त करते हैं, अपने गाँव में रहते हैं। यदि पुत्र माता-पिता के पास नहीं रहता है, परन्तु उनके भोजन-वस्त्र-आवास की समुचित व्यवस्था करता है तो पितृ यज्ञ सम्पादित माना जाएगा।

(८) राजा के पास समय नहीं हता स्वयं-माता-पिता की सेवा नहीं कर सकता है, सेवकों से ही करवाते हैं।

- स्वामी मुक्तानन्द

सड़क छाप मजनू

सड़क छाप मजनुओं की सबसे बड़ी खासियत
ये हैकि जेब में भले इनके फूटी कौंड़ी
न हो और कमाई भले ही कानी कौंड़ी की न हो
पर कपड़े हमेशा फर्स्ट क्लास होते हैं
और मजाल है कि जूतों पर मक्खी भी बैठ जाये
चेहरे पर पालिश, शरीर पर मालिश
लम्बे चौड़े बाल, आंखों पर शौकिया चश्मा
जीवन के संघर्ष, सच्चाई, देशभक्ति, अध्ययन
मनन, सम्मान से इनका दूर-दूर तक का रिश्ता नहीं होता
लड़की ने तमाचा जमा दिया, मुस्कुरा रहे हैं
पुलिस ने डंडा लगा दिया मुस्कुरा रहे हैं
बेशर्मी इनका जन्मसिद्ध अधिकार है
बाप की गाड़ी, बाप के पैसों का पेट्रोल
सारा ठाट-बाप का दिया हुआ, स्वयं का कुछ नहीं
जो अदाएं हैं वे भी फिल्मों की नकल की हुई
ये सड़क छाप मजनू आपको पान के ठेलों पर पान चबाते
गर्ल्स स्कूल के चक्कर लगाते आसनी से मिल जायेंगे
इनका खर्चा इनके बाप के मेहनत की कमाई उठाती है
सो जब तक इनके बाप हैं बाप के जेब में पैसे हैं
इनकी मजनूगिरी जिन्दाबाद..।

ले. देवेन्द्र कुमार मिश्रा, पाटनी कालोनी, भरत नगर, चन्दनगांव, जि. छिन्दवाड़ा (म.प्र.) ४८०००१

जीवन-दर्शन

जीवन में बाधक है - "अहंकार"

- दिलीप आर्य

अहंकार एक विषधर है, जिसमें व्यक्ति स्वयं को विशेष, महत्वपूर्ण समझने लगता है। अहंकारी व्यक्ति स्वयं तो पतन के मार्ग पर अग्रसर होता ही है साथ ही उससे संबंधित समाज भी दुष्प्रभावित हुए बिना नहीं रहता।

अहंकार का जागरण तब होता है, जब व्यक्ति धन-संपत्ति, सौंदर्य, शरीर बल, जाति-वंश, शक्ति-सामर्थ्य, बुद्धि, कला, पद, तपस्या, सिद्धि आदि के आधार पर स्वयं को दूसरों की तुलना में श्रेष्ठ मानने लगता है। सफलता प्राप्त करने पर वह यह समझने लगता है कि मैं ही सर्वश्रेष्ठ हूँ, मेरा जैसा कोई अन्य हो ही नहीं सकता, जो मैने किया, वह अन्य कोई कर नहीं सकता। अहंकार रुपी यह विष-बेल उसके विचारों व भावों का पोषण पाकर फलने-फूलने लगती है।

अहंकारी व्यक्ति चाहता है कि अन्य लोग उसकी प्रशंसा करें, उसकी पुष्टि करें और उसको सम्मान प्रदान करें। वह अन्य लोगों पर आधिपत्य जमाना चाहता है, उन्हें अपनी इच्छानुसार चलाना चाहता है। वह चाहता है कि अन्य व्यक्ति उसकी सभी बातों का अनुमोदन करें। वह अपनी आलोचना सुनना पसंद नहीं करता। जब तक उसके अहंकार की पुष्टि होती रहती है, तब तक वह सुखी अनुभव करता है। अहंकार की तुष्टि न होने पह वह अत्यन्त दुःखी हो जाता है तथा जिस व्यक्ति के कारण ऐसा न हो पाया हो, उससे प्रतिशोध लेने को तत्पर हो जाता है।

अहंकार का जागरण होते ही सारे सद्गुण उससे उसी प्रकार दूर होते चले जाते हैं, जिस प्रकार किसी जलस्त्रोत के सुख जाने पर उसके समीप रहने वाले पशु-पक्षी। अहंकार को मद भी कहा गया है। मद अर्थात् नशा। अहंकार का नाश हो जाने पर व्यक्ति मद्यापों की भांति मतवाला हो जाता है। उसका विवेक नष्ट होने लगता है, उसमें उचित-अनुचित का निर्णय करने का ज्ञान नहीं रहता। उसकी आत्मनिरीक्षण, स्वदोष-दर्शन की शक्ति व क्षमता समाप्त हो जाती है, फलतः उसमें अन्य अनेक दोष-दुर्गण पनपने लगते हैं। उसको किसी की प्रगति अच्छी नहीं लगती और किसी को प्रगति करता हुआ देखकर वह उससे ईर्ष्या-द्वेष करने लगता है। उसको अपने सिवाय कोई श्रेष्ठ नहीं लगता व स्वयं को श्रेष्ठ सिद्ध करने के लिए परनिंदा में रस लेने लगता है।

अहंकारी व्यक्ति के विकास का मार्ग अवरुद्ध हो जाता है। पुराणों में उल्लेख प्राप्त होता है कि देवताओं को कई बार असुरों से पराजित होना पड़ा, क्योंकि प्रत्येक देवता को अपनी शक्ति का अहंकार रहा। अहंकारी व्यक्ति की उन्नति का मार्ग तो अवरुद्ध होता ही है, इतना ही नहीं, वरन उसका पतन होना आरंभ हो जाता है। यदि समय रहते वह व्यक्ति सजग-सचेत न हो, न संभले तो अंततः अहंकार उसके विनाश का कारण बन सकता है। हिरण्यकशिपु, रावण, कंस, दुर्योधन आदि के उदाहरण सर्वविदित हैं। जब इनका अहंकार पराकाष्ठा पर पहुंच गया तो काल ने इनको समाप्त कर दिया। इसीलिए विज्ञजनों ने अहंकार से बचने के लिए कहा है।

पता - आर्यनगर, दुर्ग (छ.ग.)

ऋषि दयानन्द ! तेरे हैं हम सब पर असीम उपकार। दिन-दिन बिगड़ रहा था 'भारत', तूने आ कर दिया सुधार। था अज्ञान-अन्धेरा छाया, पाखण्डों ने जाल बिछाया, गौरव-गरिमा के उन्नायक ! तू ने सोता देश जगाया। सीधी सच्ची बात बतायी, पाखण्डों पर किया प्रहार, ऋषिवर दयानन्द ! तेरे हैं हम सब पर असीम उपकार ॥

अभिमत भावी सिंहस्थ २०२८ : संभावना एवं सुझाव
वैदिक सिंहस्थ – २०८५ वैक्रमाब्द

- रमेशचन्द्र चौहान

लगभग २५०० वर्ष पूर्व अनीश्वरवाद से ग्रस्त तथा वाममार्गी अनाचार से त्रस्त भारत को वेदों की शीतल छाया मिले एवं सब परस्पर गोवत्सवत् दुलार करें, इसी उद्देश्य से आद्य शंकराचार्य ने वेदों के अमृतोपम विचारों को जनता द्वारा हृदयंगम करने हेतु सिंहस्थ मेला प्रारम्भ किया था। अपेक्षा थी कि समस्त गुरुजन वेद ज्ञान का सम्यक प्रदान करके सम्प्रदाय (अध्ययन शाला) शब्द को सार्थक करेंगे। किन्तु वेदोद्देश्य के कुंभ का अमृत छलकाने वाले इस शंकर को विषपान करा दिया गया। कालान्तर में निहित स्वार्थों ने सिंहस्थ को उद्देश्य से भटका दिया। सोचो, यदि यह सचमुच सिंहस्थ होता तो कौम को सिंहस्थ हो जाना था, वीरोत्तम बन जाना था। परन्तु क्या कारण है कि विगत २५०० वर्षों की अवधि में कितने ही सिंहस्थ मेले व्यतीत होने के उपरान्त भी महान आर्यों के उत्तराधिकारियों को पराधीनता का विष पीना पड़ा। वास्तविकता यह है कि हम शंकराचार्य के मूलोद्देश्य वेद संधान/अनुसन्धान को भूल गए जिसे १९वीं सदी में महर्षि दयानन्द सरस्वती ने याद दिलाया।

आज वेद यूनेस्कों की विश्व धरोहर बन गया है और सारा संसार शनैः शनैः वेदों की ओर लौट रहा है। वे अपने अपने तरीके से अपने अपने स्तर पर वेदाध्ययन में लगे हैं। यहाँ विचारणीय यह है कि क्या हम भारतवासी भी इस दौड़ में है या नहीं ? कहीं हम पूर्वजों की इस महान् धरोहर के या तो तोते बनकर या उस पर बिस्तर लगाकर सोए तो नहीं है ?

भाईयों जागो, वरणीय वेदज्ञों की संगति करो। अभी आगामी सिंहस्थ तक हमारे पास बारह वर्ष हैं। हम इस अवधि में चाहें तो युगान्तर कर सकते हैं। हमें संकल्प करना है कि हम उगले कुम्भ मेले में सिंहस्थ होंगे न कि अपने आलस्य प्रमाद और पक्षपात के गंर्दभों पर आसीन होंगे। देखो, बाईबिल और कुरान के अनुयायियों में एकता विश्व विदित है, यद्यपि उनकी दिशा एवं उद्देश्य चिन्ता का विषय है। होना भी था, इसलिए कि मजहबी ग्रन्थ अपनों के लिए तो रागमूलक जबकि दूसरों के लिए द्वेष मूलक सिद्ध हुए हैं। ऐसी स्थिति में वेदों जैसे सार्वभौम प्राणिमात्र एवं पर्यावरण हितैषी ग्रन्थ या ज्ञान की विश्व को महती आवश्यकता है। यहाँ मैं वेदों की वैश्विक महत्ता के उदाहरण देकर पाठक स्वयं वेद पढ़कर जानें, ऐसी विनम्र प्रार्थना करता हूँ।

सर्वप्रथम तो इस भ्रम एवं मानसिक बाधा का भञ्जन करना होगा कि वेद मात्र पुरुष ब्राह्मणों के लिए है। यजुर्वेद २६-२ के अनुसार ईश्वरीय होने से वेद सर्ववर्णों-सर्वजाति, सर्वधर्म, सर्ववंश, सर्वसम्प्रदाय, सर्वलिंगों, सर्व आयु, सर्वकालीन, सर्वदेश तथा सर्व स्थिति के लिए है। वेदों में जो कुछ कहा गया है वह सब सम्पूर्ण विश्व की इकाइयों एवं समग्र स्वरुप के लिए है। अतः आगामी सिंहस्थ के प्रत्येक प्रपत्र पर उक्त वेद मन्त्र अंकित होना चाहिए। अभी तक जो कुछ प्रतिबन्ध वेदों के पठन-पाठन, श्रवण पर लगे, उनके लिए ईश्वर एवं उसकी सृष्टि से विनम्र क्षमा प्रार्थना एवं पश्चाताप करना होगा।

ईश्वर के ज्ञान पर प्रतिबन्ध के गुरुत्तर अपराध के कारण कौम ने यज्ञ हिंसा, दासता एवं अनेक गर्हित भोग भोगे हैं। अब आगे ऐसे बुरे दिन नहीं आएँ इस हेतु निर्णय लेना है। **स्त्री शूद्रौ न धीयाताम्...,** वेदोच्चारण पर जिह्वा छेदन, वेद श्रवण पर कान में शीशा पूरनो जैसे अमावनीय आदेशों को ऐतिहासिक भूल स्वीकार कर नकारना होगा। बारह वर्षों तक ऐसा करने से प्रत्येक शिविर में वेद ध्वनि गूँजेगी। देश के श्रद्धेय ब्राह्मण आगे आएँ तो सही, विश्व में उन्हीं की विद्या/वाणी गुंजायमान होगी। उन्हीं की संख्या बढ़ेगी। एक बात और है - अगले बारह वर्षों में हम बहिमुखीपन के स्थान पर ईश्वर केन्द्रित ध्यान सीख लें तो

बड़ा भारी परिवर्तन आएगा। हममें अद्‌भुत ऐक्य उत्पन्न हो जाएगा, जिससे विगत हजारों वर्षों में हानि को पाटा जा सकेगा, अभ्युदय होगा।

सम्प्रति, अब एक द्वादश वर्षीय अनन्तिम आयोजन प्रस्तुत है :-

(१) वेद निष्ठा :- जन सामान्य को यह समझाना होगा कि भारतीयों का एक धर्म ग्रन्थ वेद आज विश्व निधि का सम्मान पा चुका है। अब यह आपकी गृहनिधि एवं स्वाध्याय धन होना चाहिए। प्रथम ग्रन्थ होने के कारण विश्व को भाषा, ज्ञान, सभ्यता, संस्कृति आदि का प्रदाता होने का हमें गव होना चाहिए।

(२) वेद सुलभता :- वेदों के लगभग २०,००० मन्त्रों के विषयवार अर्थ सहित सेट उनके प्रकाशकों से मंगवाना होंगे तथा समस्त विद्यालयों अध्ययन-शालाओं, कार्यालयों तथा संस्थानों के ग्रन्थालयों/पुस्तकालयों के लिए थोक एवं फुटकर प्रदाय की व्यवस्था करना होगी। सरकारों इस हेतु आवश्यक बजट प्रावधान करें। प्रत्येक ग्राम कस्बा या नगर में कमीशन के आधार पर वैदिक साहित्य विक्रय केन्द्र स्थापित किए जाएँ। घर-घर वेद पहुंचाने के लिए दुग्ध/समाचार पत्र/डाक वितरकों एवं स्वयं सेवकों आदि की सेवाएँ ली जा सकती है।

(३) वेद को राष्ट्रीय ग्रन्थ घोषित किया जाए :- गुरुकुलों में वैदिक भाषा या संस्कृत माध्यम से सम्पूर्ण वेद शिक्षा क्रम पूर्ण होने पर कुछ प्रमुख स्वदेशी भाषाओं में अनुवाद करना सिखाया जाए। वेदाङ्गों में शब्द वेदाङ्ग शिक्षा व्याकरण, निरुक्त तथा छन्द अनिवर्य तथा शेष ऐच्छिक हों। गुरुकुलों के अधिष्ठाताओं के पर्यवेक्षण में शिक्षण संस्थाओं हेतु समन्वयात्मक एवं परस्पर पूरक पाठ्यक्रम लागू हो। मात्र विदेश प्रवास के इच्छुकों के लिए विदेशी भाषा के माध्यम से शिक्षा व्यवस्था हो। शेष देश को यह बोझ ढोने की आवश्यकता नहीं है। शिक्षा मन्त्रालयों को भी काले अंग्रेजों की दासता से मुक्त रखना होगा। वेदज्ञों के रोजगार पदोन्नति की गारंटी हो।

(४) समस्त विद्यालयों/अध्ययनशालाओं के पाठ्यक्रमों में विषयानुसार वेद मन्त्र इतिहास के रुप में सम्मिलित किए जाएँ। वहाँ समय-समय पर प्रतियोगिताएँ, परिचर्चा, वेदमन्त्रों की अन्त्याक्षरी तथा पुरस्कार वितरण का प्रावधान हो।

(५) दूरदर्शन-आकाशवाणी आदि दृष्यश्राव्य माध्यमों से अर्थ सहित धारा प्रवाह निरन्तर सामगान सहित वेद पाठ का प्रसारण हो। वैदिक परिचर्चा, शंका समाधान आदि न्य विधाओं का आयोजन तथा व्यापक प्रसारण हो।

(६) सामवेदियों सहित वेद पाठियों का सार्वजनिक सम्मान तथा उनकी परम्परा के पोषण एवं वृद्धि की व्यवस्था हो। कतिपय वैदिक आचारवान परिवारों को सम्मानित एवं प्रोत्साहित किया जाए। गुरुकुल जाने वाले छात्रों का व्यय शासन उठाए।

(७) नगर-नगर, ग्राम-ग्राम में विशेष प्रसंगों समूह लग्न, जातीय सम्मेलनों आदि अवसरों पर वैदिक गीतों, वैदिक विचार, सभ्यता, संस्कृति आदि पर आधारित राष्ट्रवीरों के प्रेरक जीवन सम्बन्धी नाटक प्रहसनों, भजनोपदेश तथा उनके प्रशिक्षण की समुचित व्यवस्था हो।

(८) केन्द्र/राज्यों में वैदिक संग्रहालय हों। वहां विदेशी वैदिक वस्तुओं की भी प्रतिकृति विद्यमान हो।

यह सब इसलिए सम्भव है कि भारतीयों का शब्द वेदों से लिया हुआ है, रुपान्तर भले हुआ हो। भार माता सिंहस्थ है। उसकी सन्तानें हम भी अवश्य उक्त उद्देश्य को प्राप्त करेंगे।

पता : २६२-ए, पार्श्वनाथ नगर, इन्दौर-४५२००९

- योग सुविचार -

वेद शास्त्रों के श्रवण से, अनुमान अर्थात् मनन से, ध्यानाभ्यास से अर्थात् निदिध्यासन के द्वारा बुद्धि को प्रकृष्ट बनाता हुआ साधक उत्तम योग को प्राप्त करता है।

१५ नवम्बर जयंती

स्वामी दर्शनानन्द

- **डॉ. अशोक आर्य (मण्डी डबवाली)**, आर्य कुटीर, ११६, मित्र विहार, १२५१०४, हरियाणा

आर्य समाज के महान् दार्शनिक स्वामी दर्शनानन्द जी का जन्म कुलीन ब्राह्मण रामप्रताप निवासी जगराओं जिला लुधियाणा, पंजाब के यहाँ माघ कृष्ण १० सं. १९१८ वि. (इस वर्ष १५ नवम्बर जन्म दिन) को हुआ। आरंभिक नाम नेतराम को बदल कर कृपाराम रखा गया। फारसी व संस्कृत की शिक्षा प्राप्त की तथा ११ वर्ष की आयु में विवाह हो गया। वैराग्य वृत्ति वाले कृपाराम ने पिता के व्यापार को सम्भालने में कुछ भी रुचि न ली। घूमते हुए अमृतसर में महर्षि के विचार सुन नवीन वेदान्ती कृपाराम पर दयानन्द का रंग चढ़ गया। आपने महर्षि के ३७ व्याख्यान सुने तथा इतने वर्ष ही आर्य समाज की सेवा का गौरव भी पाया। काशी जाकर दर्शनों का विस्तृत अध्ययन किया तथा जो पैसा वह लेकर गए थे, उससे काशी में **"तिमिर नाशक यन्त्रालय"** स्थापित किया। यहां से व्याकरण व अनेक आर्ष ग्रन्थ छापकर विद्यार्थियों को सस्ते दामों में दिये। इससे छात्र मण्डली में अच्छी प्रसिद्धि मिली। १९९३-९४ में पंजाब तथा १८९९-१९०० में आगरा में प्रचार किया तथा लघु प्रचार पुस्तकें लिखना, व्याख्यान देना व शास्त्रार्थ आपके दैनिक कर्म बन गए। आगरा में ही पं. भीमसेन शर्मा से शास्त्रार्थ हुआ तथा अगले वर्ष ही गंगातट के राजघाट स्थान पर स्वामी अनुभवानन्द से संन्यास लेकर दर्शनानन्द स्वामी के नाम से प्रचार में जुए गए।

आर्य समाज के शास्त्रार्थियों में आप का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। सभी मतानुयायियों से अनेक शास्त्रार्थ किये। इस क्षेत्र में आपने अपनों को भी नहीं छोड़ा तथा वृक्षों में जीव विषय पर पं. गणपति शर्मा जी से भी उलझ पड़े, जो कि आर्यसमाज के सम्मानित प्रवक्ता थे। आपने प्रचार में पत्र व पत्रिकाओं के महत्व को खूब पहचाना। अतः आपने एक के बाद एक कुल एक दर्जन के लगभग उर्दू व हिन्दी पत्रिकाओं का सम्पादन किया। आपके प्रचार काल में आपके प्रचार क्षेत्र की भाषा उर्दू होने के कारण आपका अधिकांश लेखन व अधिकांश पत्रिकाएं उर्दू में ही रहीं। यह सब करते हुए भी आपने गुरुकुलों की वृद्धि में अपना पूरा ध्यान दिया। आप गुरुकुल शिक्षा के महत्व को अच्छी प्रकार समझते थे। आप नेतागिरी पसन्द न करते "काम करो व भूल जाओ" की भावना आपमें अति बलवती थी। इसीके मध्य दृष्टि आपकी सदा यही नीति रही कि आपने मेहनत करके गुरुकुलों की स्थापना की, अच्छी प्रकार व्यवस्थित होने के पश्चात् इन्हें सुयोग्य हाथों में सौंप दिया। आपने सिकन्दराबाद से रावलपिंडी तक अनेक गुरुकुलों की स्थापना की। वर्तमान गुरुकुल ज्वालापुर भी आपके प्रताप का ही गुणगान कर रहा है। जहां तक लेखिनी का प्रश्न है. इस क्षेत्र में भी आपकी देन अभूतपूर्व ही रही है। आपने जितनी मात्रा में तथा जितना गुणों से युक्त साहित्य विरासत में दिया, इतना बहुत कम आर्य महापुरुष ही लिख पाए हैं। आपके लेखन के विषय में यह प्रसिद्ध है कि आप प्रतिदिन किसी गहन प्रचारात्मक विषय पर एक लघु पुस्तक लिखा करते थे। इनकी निश्चित संख्या बताना अनुमान से परे हैं। दर्शनों पर आपके तार्किक भाष्य तथा छः उपनिषदों पर अत्यन्त सरल व्याख्या देकर इसे आपने सर्व सुलभ बना दिया। मनु स्मृति व गीता की टीका भी आपकी लेखनी के दर्शन कराती है। भारी संख्या में अन्य मतों की समीक्षा में भी अनेक पुस्तकें लिखीं। आप न केवल नियमित देशाटन करते रहे अपितु लेखन, प्रचार व शास्त्रार्थों में भी आपने कभी विराम न आने दिया। परिणामस्वरुप स्वास्थ्य में गिरावट आना स्वाभाविक ही था। अतः हाथरस अस्पताल में चिकित्सा के मध्य आपका देहान्त ११मई को हो गया। आपके निधन से एक महान् शास्त्रार्थ अद्वितीय प्रचारक, अभूतपूर्व वैदिक लेखक, गुरुकुलों की संख्या बढ़ाने वाला यह सितारा ऐसा विदा हुआ कि इस क्षति को पूरा कर पाना हमारे लिए असम्भव हो गया। यदि उनके जीवन से कुछ प्रेरणा लेकर हम भी स्वाध्याय व प्रचार को बढ़ा सकें तो यह उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी। ●

पुण्य स्मरण

क्रांतिकारी भाई परमानन्द या पं. परमाननंद

- डॉ. विवेक आर्य

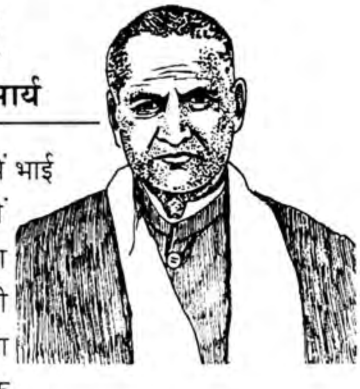

भाई परमानन्द या पण्डित परमाननंद (४ नवंबर, १८७६, ८ दिसम्बर १९४७) भारत स्वतन्त्रता संग्राम के महान क्रांतिकारी थे। वे बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी महापुरुष थे। वे जहां आर्यसमाज और वैदिक धर्म के अनन्य प्रचारक थे, वहीं इतिहासकार, साहित्यमनीषी और शिक्षाविद् के रुप में भी उन्होंने ख्याति अर्जित की थी। सरदार भगतसिंह, सुखदेव, रामप्रसाद बिस्मिल, करतार सिंह सराबा जैसे असंख्य राष्ट्रभक्त युवक भाई जी से प्रेरणा प्राप्त कर बलि-पथ के राही बने थे।

भाई जी का जन्म ४ नवम्बर १८७६ को जिला जेहलम (अब पाकिस्तान में) के करियाना ग्राम में एक ब्राह्मण परिवार में हुआ था। इनके पिताजी का नाम भाई ताराचन्द्र था। इसी पावन कुल के भाई मतिदास ने हिन्दू धर्म की रक्षा के लिए गुरु तेगबहादुर जी के साथ दिल्ली पहुंच कर औरंगजेब की चुनौती स्वीकार की थी। सन् १९०२ में भाई परमानन्द ने शिक्षा प्राप्त करके लाहोर के दयानन्द एंग्लो महाविद्यालय में शिक्षक नियुक्त हुए।

अफ्रीका में वैदिक धर्म पर व्याख्यान देने के लिए सन् १९०५ में भाई जी अफ्रीका पहुंचे। डर्बन में भाई जी की गांदी जी से भेंट हुई। अफ्रीका में उस समय अप्रवासी भारतियों को ईसाई बनाने का जोर था, भाई जी के भाषणों से चेतना का प्रसार पुआ और ईसाई धर्म अंतरण पर रोक लगी, वहां से भाई जी लन्दन चले गए। वहां उन दिनों श्री श्यामजी कृष्ण वर्मा तथा सावरकर जी क्रांतिकारी कार्यों में सक्रिय थे। भाई जी दोनों के सम्पर्क में आए।

भाई जी सन् १९०७ में भारत लौट आए। दयानन्द वैदिक महाविद्यालय में पढ़ाने के साथ-साथ वे युवकों को क्रांति के लिए प्रेरित करने के कार्य में सक्रिय रहे। सरदार अजित सिंह और लाला लाजपतराय जी से उनका निकट का सम्पर्क था। उसी दौरान लाहौर पुलिस उनके पीछे पड़ गई। सन् १९१० में भाई जी को लाहौर में गिरफ्तार कर लिया गया। किन्तु शीघ्र ही उन्हें जमानत पर रिहा कर दिया गया। इसके बाद भाई जी अमरीका चले गए तथा वहां उन्होंने अप्रवासी भारतीयों में वैदिक (हिन्दू) धर्म का प्रचार किया। लाला जी के आदि के साथ वे भारत की स्वाधीनता के लिए प्रयासरत रहे। करतार सिंह सराबा, विष्णु गणेश पिंगले तथा अन्य युवकों ने उनकी प्रेरणा से अपना जीवन भारत की स्वाधीनता के लिए समर्पित करने का संकल्प लिया। १९१३ में भारत लौटकर भाई जी पुनः लाहौर में युवकों को क्रांति की प्रेरणा देने के कार्य में सक्रिय हो गए।

भाई जी द्वारा लिखी पुस्तक, "तवारीख-ए-हिन्द" तथा उनके लेख युवकों को सशस्त्र क्रांति के लिए प्रेरित करते थे। २५ फरवरी १९१५ को लाहौर में भाई जी को गिरफ्तार कर लिया गया। उनके विरुद्ध अमरीका तथा इंग्लैण्ड में अंग्रेजी सत्ता के विरुद्ध षड़यंत्र रचने, करतार सिंह सराबा तथा अन्य अनेक युवकों को सशस्त्र क्रांति के लिए प्रेरित करने, आपत्तिजनक साहित्य की रचना करने जैसे आरोप लगाकर फांसी की सजा सुना दी गई। सजा का समाचार मिलते ही देशभर के लोग उद्विग्न हो उठे। अन्ततः भाई जी की भांसी की सजा रद्द कर उन्हें आजीवन कारावास का दण्ड देकर दिसम्बर १९१५ में अण्डमान (कालापानी) भेज दिया गया। उधर भाई जी जेल में अमानवीय यातनाएँ सहन कर रहे थे, इधर उनकी धर्मपत्नी श्रीमती भाग्यसुधि धनाभाव के बावजूद पूर्ण स्वाभिमान और साहस के साथ अपने परिवार का पालन-पोषण कर रही थीं।

अंडमान की कालकोठरी में भाई जी को गीता के उपदेशों ने सदैव कर्मठ बनाए रखा। जेल में श्रीमद्भगवद गीता संबंधी लिखे गए अंशों के आधार पर उन्होने बाद में **"मेरे अन्त समय का आश्रय गीता"** नामक ग्रंथ की रचना की। गांधी जी को जब कालापानी में उन्हें अमानवीय यातनाएँ दिए जाने का समाचार मिला तो उन्होने १९ दिसंबर १९१९ को **"यंग इंडिया"** में एक लेख लिखकर यातनाओं की कठोर भर्त्सना की। सी फ अंद्रव्स द्वारा उनकी रिहाई की भी मांग की गई। २० अप्रैल १९२० को भाई जी को कालापानी जेल से मुक्त कर दिया गया। कालेपानी की कालकोठरी में पांच वर्षों में भाई जी ने जो अमानवीय यातनाएँ सहन की, भाई जी द्वारा लिखित **'मेरी आपबीती'** पुस्तक में उनका वर्णन पढ़कर रोंगटे खड़े जो जाते हैं। प्रो. धर्मवीर द्वारा लिखित **'क्रांतिकारी भाई परमानन्द'** ग्रंथ में भी इन यातनाओं का रोमांचकारी वर्णन दिया गया है।

जेल से मुक्त होकर भाई जी ने पुनः लाहौर को अपना कार्य क्षेत्र बनाया। लाला लाजपतराय भाई जी के अनन्य मित्रों में थे। उन्होने **"नेशनल कालेज"** की स्थापना की तो उसका कार्यभार भाई जी को सौंपा गया। इसी कालेज में भगतसिंह व सुखदेव आदि पढ़ते थे। भाई जी ने उन्हें भी सशस्त्र क्रांति के यज्ञ में आहुतियां देने के लिए प्रेरित किया। भाई जी ने **'वीर बंद बैरागी'** पुस्तक की रचना की, जो पूरे देश में चर्चित रही।

कांग्रेस तथा गांधी जी ने जब मुस्लिम तुष्टीकरण की घातक नीति अपनाई तो भाई जी ने उसका कड़ा विरोध किया। वे जगह-जगह हिन्दू संगठन के महत्व पर बल देते थे। भाई जी ने **'हिन्दू'** पत्र का प्रकाशन कर देश को खंडित करने के षड़यंत्रों को उजागर किया। भाई जी ने सन् १९३० में ही यह भविष्यवाणी कर दी थी कि मुस्लिम नेताओं का अंतिम उद्देश्य मातृभूमि का विभाजन कर पाकिस्तान का निर्माण है। भाई जी ने यह भी चेतावनी दी थी कि कांग्रेसी नेताओं पर विश्वास न करो, ये विश्वासघात कर देश का विभाजन कराएंगे। जब भाई जी की भविष्यवाणी सत्य सिद्ध हुई तथा भारत विभाजन और पाकिस्तान के निर्माण की घोषणा हई और लाखों हिन्दुओं को मौत के घाट उतार दिया गया, जिससे भाई जी के हृदय में एक ऐसी वेदना पनपी कि वे उससे उबर नहीं पाए तथा ८ दिसम्बर १९४७ को उन्होने संसार से विदा ले ली। आज उनके जन्मदिन पर प्रेरणा पाकर हम देश और हिन्दू जाति की रक्षा के लिए प्रण करते हैं।

एक आर्य नेता का बड़प्पन

श्री केशवराम जी हैदराबाद राज्य के शीर्षस्थ नेताओं में से एक थे। वह हाईकोर्ट के जज बन चुके थे। एक बार वह राजकीय पद के नाते यात्रा करते हुए अपने गांव पुराजल पहुंचे। गांव में से निकलते हुये, उनकी दृष्टि एक व्यक्ति पर पड़ी। बड़ा बेडोल शरीर था। कपड़े तेल से सने हुए। देखते ही पता चलता था कि कोई तेली है। राव साहब पं. केशवराव पहचान गये कि उनका बाल्यकाल का लंगोटिया सखा कृष्णा है। इसके साथ राव साहब गोलिया खेला करते थे। न्यायमूर्ति केशवराव बड़े भावावेश में आकर उसके गले लिपट गये।

साथ चल रहे अधिकारी, कर्मचारी, सेवक प्रतिष्ठित नागरिक सब चकित रह गये। कृष्णा जान गया कि उसका लंगोटिया मित्र अब एक बड़ा नेता व हाईकोर्ट का जज बन चुका है फिर भी स्नेह से उस अकिंचन को गले लगा रहा है। इस दृश्य को देखकर कृष्णा के नयन सजल हो गये।

श्री कृष्णा ने सुदामा से यही व्यवहार तो किया था। अन्तर एक है सुदामा था तो विद्वान् एक तपस्वी ब्राह्मण। परन्तु बीसवी सदी ईस्वी का केशव जिस कृष्णा को छाती से लगाता है वह था मैले कपड़ों वाला एक तेली।

- ऋषि कुमार आर्य

होमियोपैथी से अस्थमा का उपचार

- डॉ. विद्याकान्त त्रिवेदी
(होमियोपैथिक चिकित्सक)
मोबा. : ९८२६५११९८३, ९४२५५१५३३६

अस्थमा पूरे विश्व में एक सामान्य बीमारी है, जो कि जानलेवा भी हो सकती है। ऐसे में होमियोपैथी उपचार लाभकारी होता है। यह अस्थमा के उपचार के लिये उपयोगी सिद्ध हुआ है और यह चिकित्सा का एक सम्पूर्ण तंत्र है, जो कि शरीर की प्राकृतिक तौर पर अपने आप चंगा होने की प्रवृत्ति को बढ़ाता है। फिर भी होमियोपैथी उपचार शुरु करने से पहले किी होमियोपैथिक चिकित्सक की राय अवश्य लें।

अस्थमा के उपचार के लिए होमियोपैथिक औषधियाँ-

अस्थमा के उपचार के लिये अनेक होमियोपैथिक औषधियाँ बेहद उपयोगी है। अस्थमा के एक गम्भीर दौरे में आपको यह सलाह दी जाती है कि आप एक चिकित्सक से संपर्क करें। अस्थमा के गंभीर दौरे के खत्म होने के बाद होमियोपैथी उपचार लेने से भविष्य में होने वाले अस्थमा की बारंबारता और तीव्रता घट जाती है। अस्थमा के उपचार के लिए उपयोग में आने वाली औषधियों में से कुछ सामान्य **औषधियाँ** - अर्सेनिकम अलबम (अर्सेनिकम) : इसं दवा का उपयोग सामान्य तौर पर एक एक्यूट अस्थमा के रोगी के लिए किया जाता है। इसका उपयोग आम तौरपर बैचेनी, भय, कमजोरी और आधी रात को या आधी रात के बाद इन लक्षणों का बढ़ना, जैसे लक्षणों से पीड़ित मरीजों के लिए किया जाता है।

हाऊस डस्ट माईट (हाऊस डस्ट माईट) :- इस दवा का उपयोग अक्सर ऐसे मरीजों के लिये किया जाता है, जिन्हें घर में होने वाली धूल से एलर्जी होती है। चूंकि लोगों में धूल की एलर्जी होना आम बात है, इस दवा को अस्थमा के एक गंभीर दौरे के लिए एक महत्वपूर्ण उपचार माना जाता है।

स्पोंजिआ (रोस्टेड स्पंज) :- यह उन अस्थमा से पीड़ित लोगों के लिए उपयोग में लाई जाती है, जिनको बेहद कष्टदायी खांसी होती है, और छाती में बहुत कम या बिलकुल भी कफ नहीं होता है। इस प्रकार का अस्थमा एक व्यक्ति को ठंड लगने के बाद शुरु होता है। इन मरीजों में अक्सर सूखी खांसी होती है।

लोबेलिआ (भारतीय तम्बाकू) :- इस दवा का उपयोग उन अस्थमा से पीड़ित लोगों के लिए बेहद फायदेमंद है, जिन्हें सांस की घबराहट के साथ एक लाक्षणिक (टिपिकल) अस्थमा का दौरा पड़ता है। (इसमें छाती में दबाव का एक अहसास और सूखी खांसी भी शामिल है)।

सेमबकस नाइग्रा (एल्डर) :- इस दवा का उपयोग उन अस्थमा से पीड़ित लोगों के लिए बेहद फायदेमंद है, जिन लोगों में सांस की घबराहट की आवाज के साथ दम घुटनेके लक्षण दिखाई देते हैं, खासकर यदि ये लक्षण आधी रात को या आधी रात के बाद, या लेटने के दौरान या जब मरीज ठंडी हवा के संपर्क में आते हैं, ऐसी स्थिति में अधिक बढ़ते हैं।

इपेकक्युआन्हा (इफेकाक रुट) :- इस दवा का उपयोग उन अस्थमा से पीड़ित लोगों के लिए बेहद फायदेमंद है, जिन लोगों की छाती में बहुत अधिक मात्रा में बलगम होता है।

एंटीमोनियम टेर्टारिकम (टार्टर एमेटिक) :- इस दवा का उपयोग उन अस्थमा से पीड़ित बुजुर्गों और बच्चों के लिए बेहद फायदेमंद है, जिनकी पूर्ण श्वसन-प्रश्चसन प्रक्रिया में शिथिलता या तेजी हो।

चामोमिल्ला (चामोमिल्ला) :- ब्रायोनिआ (व्हाईट ब्रायोनी), काली ब्रायक्रोमिकम (बायक्रोमेट ऑफ पोटाश), नक्स वोमिका (पोइटजन नट) जैसी दवाईयां अस्थमा के उपचार के लिए उपयोग में लाई जाती है। नैदानिक जांच से पता जलता है कि अस्थमा के उपचार के लिए होमियोपैधिक दवाईयाँ असरकारक होती है। अस्थमा एक गंभीर बीमारी है, जिसे एक प्रशिक्षित होमियोपैथिक चिकित्सक की देखरेख में ठीक किया जा सकता है। होमियोपैथिक औषधियाँ दीर्घकालिक अस्थमा में लक्षणों को नियंत्रित करने में मदद करती है। इसलिये योग्य होमियोपैथिक चिकित्सक की सलाह से अस्थमा पर नियंत्रण पाया जा सकता है। कई रोई मेरे द्वारा उपचार कराकर ठीक हो गए हैं और कई रोगियों का उपचार चल रहा है।

पता : त्रिवेदी होमियो औषधालय, टाटीबन्ध रायपुर (छ.ग.)

-: आपका पत्र मिला। धन्यवाद :-

- बृजमोहन मनोचा,
आर्यसमाज मंदिर, सिविल लाईन कटनी
(म.प्र.)४८३५०१

प्रिय सम्पादक मंडल,
'अग्निदूत' मासिक दुर्ग
महोदय,

सादर नमस्ते,

ईश्वर आप सब एवं समस्त 'अग्निदूत' परिवार को सुन्दर स्वास्थ्य एवं दीर्घ आयु प्रदान करे, यही कामना है। आप इसी प्रकार आर्यसमाज के उद्देश्यों एवं महर्षि के मन्तव्यों का प्रचार-प्रसार करते रहें इस हेतु मेरी ओर से बहुत-बहुत आशीर्वाद।

अग्निदूत का मैं प्रारंभ से सदस्य ही नहीं हूँ हर अंक पढ़ता भी जरुर हूँ। हर सम्पादकीय अनुकरणीय होता है। इसी संदर्भ में अनुरोध है कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली जो मुख्य दो गुट में पिछले दस वर्ष से बंट गयी है, उसके एकीकरण हेतु प्रयास करें, आप एवं अन्य विद्वान् लेख लिखें एवं व्यक्तिगत दबाव बनायें, इस संबंध में बहुत पीड़ा है। जब वह संगठित नहीं होंगे तो हमारी प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा कैसे ? केवल संगठन सूक्त पाठ से कुछ नहीं होगा और न ही उद्देश्य पूरे होंगे।

कुछ विचार अगले पत्र में, आपका शुभचिंतक

- बृजमोहन मनोचा,

आदरणीय मनोचा जी,

सादर नमस्ते,

प्रभु कृपा से आपके सर्वविधकुशलता की कामना करता हूँ। आपका स्नेहिल पत्र मिला। तदर्थ हार्दिक धन्यवाद।

अग्निदूत के वैचारिक अभियान की निरन्तरता हेतु आपने आशीर्वचन दिए हैं, यह पढ़कर हमें जहां अत्यन्त प्रसन्नता हुई, वहीं एक सम्बल भी मिला कि हमें अपने प्रयासों को सतत गतिमान् रखना है। शिरोमणि सभा की वर्तमान दशा से जैसे आप चिन्तित हैं वैसे हम भी चिन्तित हैं। महराज भर्तृहरि ने अपने नीतिशास्त्र में एक बात लिखी है **"ज्ञानलवदुर्विदग्धं ब्रह्माऽपि तं नरं न रञ्जयति"** अर्थात् जगाया उसे जा सकता है जो सचमुच सोया हो, किन्तु जो जागता हुआ सोने का नाटक करे उसे आप कैसे जगाएँगे ? हमारे कर्णधार कुछ कुछ इसी समस्या से ग्रस्त हैं, अस्तु।

सांगठनिक न्यूनता से हमारी शक्ति बिखर गई है प्रबुद्धजन इस बात से भलीभांति परिचित हैं, अनेक छोटे छोटे धार्मिक संगठनों के मंच बने हुए हैं, प्रवक्ता बने हुए हैं कभी भी किसी सिद्धान्तहीन बातों का प्रचार-प्रसार धड़ल्ले से प्रिंट एवं इलेक्ट्रानिक मीडिया से कर देते हैं। किन्तु हमारे पास किसी चीज की कमी न होते हुए भी सिर्फ एकजुटता के अभाव अपने राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्वरुप को स्थापित करने में हम नाकाम हो रहे हैं। यह समय हमेशा नहीं रहेगा आपकी हमारी पीड़ा से ही व्यथित हो हमारे बीच से हममें से ही कोई अवश्य आगे आकर ऋषि दयानन्द तथा उनके बलिदानी शिष्य परम्परा के स्वर्णिम इतिहास को पुनः रचते हुए समाज को सर्वोच्च गरिमा प्रदान करेगा। हम अपने स्तर पर आर्यों को संगठित करें, यही एक उपाय है।

धन्यवाद।

- **आचार्य कर्मवीर**, सम्पादक

तीर्थानां हृदयं तीर्थं शुचीनां हृदयं शुचिः ॥

सब तीर्थों में अंतरात्मा ही परम तीर्थ है और सब पवित्रताओं में हृदय की पवित्रता ही प्रमुख है।

समाचार प्रवाह

आर्यसमाज बिलासपुर के तत्वावधान में वेद प्रचार महोत्सव का भव्य कार्यक्रम सम्पन्न

बिलासपुर । परमात्मा के वेद ज्ञान को जन-जन तक पहुँचाने एवं उनके अनुसार आचरण करने की प्रेरणा देने के पावन उद्देश्य से आर्यसमाज बिलासपुर द्वारा रविवार ११ से १८ सितम्बर २०१६ तक वेद प्रचार महोत्सव का भव्य आयोजन किया गया। कार्यक्रम शुभारंभ ११ सितंबर २०१६ को आर्यसमाज के साप्ताहिक हवन, सत्संग के साथ हुआ। इस अवसर पर बिजनौर (उ.प्र.) से पधारे वैदिक भजनोपदेशक पं. कुलदीप विद्यार्थी जी ने अपने भजनों एवं विभिन्न प्रेरक दृष्टांतो के माध्यम से जन मानस को वैदिक सिद्धान्तों का परिचय करते हुए अंधविश्वास, पाखण्ड व कुरीतियों से दूर रहने के लिए सजग किया। वेद प्रचार महोत्सव के तहत ८ दिनों में बिलासपुर नगर के साथ-साथ अनेक गाँवों में १८ कार्यक्रम आयोजित किए गए। उक्त सभी स्थानों पर पं. कुलदीप विद्यार्थी जी अपनी मंडली सहित पहुंचकर आध्यात्मिक भजनों एवं वेदोपदेश के द्वारा श्रोताओं को मानव जीवन का उद्देश्य तथा सुखपूर्वक जीने का सुगम मार्ग बताया।

रविवार १८ सितंबर २०१६ के साप्ताहिक हवन सत्संग कार्यक्रम में वेद प्रचार महोत्सव में पधारे विद्वानों एवं कार्यक्रम में सहयोग प्रदान करने वाले कार्यकर्त्ताओं का आर्यसमाज द्वारा सम्मान किया गया। इस अवसर पर आशु कवि आर्य पुष्कर जायसवाल जी ने स्वरचित कविता द्वारा विद्वानों एवं अतिथियों के आभार प्रदर्शन के साथ ८ दिनों तक १८ स्थानों पर आयोजित वेद प्रचार महोत्सव का सारगर्भित काव्यमय सारांश प्रस्तुत किया। कार्यक्रम से प्रेरित एवं प्रभावित होकर अनेक लोगों ने स्वेच्छा से आर्यसमाज की सदस्यता ग्रहण करते हुए वैदिक धर्म को अपनाने का संकल्प लिया।

संवाददाता : सुदर्शन जायसवाल, मंत्री आर्यसमाज बिलासपुर

संस्कार श्रीवत्स जयन्ती समारोह सम्पन्न

ओड़िसा। प्रदेश के सर्वप्रथम आर्यसमाजी, सत्यार्थ प्रकाश, संस्कारविधि आदि ऋषिकृत ग्रन्थों के सर्वप्रथम ओड़िसा अनुवादक, ओड़िसा के सर्वप्रथम गोशाला के संस्थापक स्व. श्रीवत्स पण्डा जी का १४७वाँ जन्म जयन्ती समारोह जगन्नियन्ता प्रभु की दया से दि. २ अक्टूबर २०१६ को तनरडा गोरक्षा आश्रम के मंत्री आर्यजगत के युवा वैदिक विद्वान् डॉ. सुदर्शनदेव आचार्य जी के कुशल संयोजकत्व में तथा आश्रम के समस्त पदाधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं के पुरुषार्थ से निर्विघ्न सम्पन्न हुआ। जन्म जयन्ती कार्यक्रम में पूज्य स्वामी धर्मानन्द सरस्वती, इं. प्रियव्रत दास गुप्ता, शन्नोदेवी भुवनेश्वर, गुरुकुल वेदव्यास के अधिष्ठाता आचार्य डॉ. देवव्रत जी तथा ओड़िसा के विभिन्न आर्यसमाजों से सैकड़ों श्रद्धालु आर्यसज्जन उपस्थित थे। इस अवसर पर श्री जितेन्द्र मोहन मेहता जी नई दिल्ली के आर्थिक सहयोग से गुरुकुल हरिपुर के तत्वावधान में स्थानीय पचास दिव्यांग परिवारों को कम्बल एवं साड़ी वितरण किया गया।

संवाददाता : प्रमोद महान्ति, श्री.गो.आ.तनरडा भंजनगर

उत्सवीय सूचना

आपको यह जानकर अति हर्ष होगा कि आप सभी महानुभावों के स्नेह, सौहार्द, सद्भावना से संचालित गुरुकुल हरिपुर जुनवानी का **सप्तम चतुर्वेद पारायण महायज्ञ एवं वार्षिक महोत्सव** दि. २८, २९, ३० जनवरी २०१७ को देश के लब्धप्रतिष्ठ विद्वानों, साधु-सन्तों, सद्गृहस्थियों एवं श्रद्धालुओं आर्यजनों की पावन उपस्थिति में सम्पन्न होने जा रहा है। आप सपरिवार आचार्यों तथा ब्रह्मचारियों का दर्शन कर पुण्य लाभ प्राप्त करें।

परोपकारी के यशस्वी सम्पादक डॉ. धर्मवीर नहीं रहे

आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के उत्तराधिकारिणी संस्था श्रीमती परोपकारिणी सभा अजमेर के प्रधान वेदों के गम्भीर विद्वान्, लोकप्रिय लेखक, कुशल प्रवक्ता, विलक्षण दार्शनिक गुरुकुल झज्जर के सुयोग्य स्नातक "परोपकारी" पत्रिका के यशस्वी सम्पादक डॉ. धर्मवीर जी ६ अक्टूबर २०१६ को प्रातः अप्रत्याशित देहावसान हो गया। उनके अन्त्येष्टि संस्कार कार्यक्रम में सभा प्रधान आचार्य अंशुदेव आर्य भी उपस्थित रहे। उनके असामयिक प्रयाण से सम्पूर्ण आर्यजगत् स्तब्ध रह गया। दिन रात ऋषि मिशन के लिए एक कर देने वाले डॉ. साहब एक विलक्षण धून के धनी थे, परोपकारिणी सभा को अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति दिलाने में आपने आप्राण प्रयास किए। प्रचारार्थ आपका निरन्तर प्रवास वैदिक धर्म का एक सच्चा दीवाना साबित करता था। आपका सरल सहज और तार्किक व्याख्यान हर प्रबुद्ध को प्रभावित करता था। आपका असमय प्रयाण आर्यजगत् में एक बहुत बड़ा शून्य को दे गया। हम छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा एवं अग्निदूत परिवार की ओर से परमेश प्रभु से प्रार्थना करते हैं शोक सन्तप्त परिवार को असहय वेदना सहने की शक्ति एवं दिवंगत आत्मा को श्रेष्ठ आश्रय प्रदान करें।

- सम्पादक

आर्यसमाज सान्ताक्रुज में वर्ष २०१७ के लिए पुरस्कारों के प्रविष्टियाँ आमंत्रित

आर्यसमाज सान्ताक्रुज वर्ष २०१७ के लिए निम्नलिखित पुरस्कारों के प्रविष्टियाँ आमंत्रित की जाती है- **(१) वेद-वेदांग पुरस्कार (२) वेदोपदेशक पुरस्कार (३) श्री मेघजी भाई आर्य साहित्य पुरस्कार (४) श्रीमती लीलावती महाशय आर्य महिला पुरस्कार (५) पं. युधिष्ठिर मीमांसक स्मृति पुरस्कार (६) श्रीमती कृष्णा गान्धी आर्य युवक पुरस्कार (७) श्री राजकुमार कोहली वरिष्ठ विद्वान् पुरस्कार (८) श्रीमती प्रेमलता सहगल युवा महिला पुरस्कार (९) श्रीमती भागीदेवी छाबरिया गुरुकुल सहायता पुरस्कार (१०) श्री झाऊलाल शर्मा गुरुकुल सहायता पुरस्कार (११) श्रीमती शिवराजवती आर्या बाल पुरस्कार (१२) श्री हरभगवानदास गांधी मेधावी छात्र पुरस्कार (१३) स्व. आचार्य भद्रसेन युवा वैदिक विद्वान् पुरस्कार (१४) स्व. नारायणदास हासानन्दजी विशिष्ट वेदांग पुरस्कार (१५) कैप्टन देवरत्न आर्य संगठनवीर पुरस्कार।**

इस अवसर पर पुरस्कृत सभी विद्वानों को पुरस्कार राशि के साथ शाल, श्रीफल, रजत ट्राफी तथा म्रोती माला से सम्मानित किया जायेगा।

जो विद्वान/आर्य बन्धु किसी विद्वान् का नाम उपरोक्त पुरस्कारों हेतु प्रस्तावित करना चाहते हैं, वे विद्वान् के जीवन परिचय, कार्य एवं लिखे गये ग्रन्थों की सूची एवं प्रति सहित विस्तृत जानकारी दि. ३१-१०-२०१६ तक भेजने की कृपा करें।

आपके द्वारा प्रस्तावित नामों के आधार पर निर्णायक मंडल वर्ष २०१७ के लिए उपरोक्त पुरस्कारों के लिये विद्वान का चयन करेगा। अंतिम निर्णय का अधिकार आर्यसमाज सान्ताक्रुज (प.) मुम्बई की अन्तरंग सभा के पास सुरक्षित होगा।

नोट : आर्यसमाज सान्ताक्रुज द्वारा उपरोक्त पुरस्कारों हेतु प्रविष्टियाँ आमंत्रित की जाती है। दिनांक ३१-१०-२०१६ तक प्रविष्टियाँ आर्यसमाज सान्ताक्रुज के कार्यालय में पहुंच जानी चाहिए।

भवदीय

संगीत आर्य

(संयोजक : पुरस्कार समिति)

संपर्क नं. २६६०-२८००/२२९३-१५१८

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन सफलतापूर्वक सम्पन्न

टुँडिखेल (काठमाण्डू नेपाल) । नेपाल प्राचीन ऋषिमुनियों की पवित्र तपस्थली रही है । कैलाशपति भगवान् शिव ने इसी पवित्र भूमि में साधना और योगाभ्यास करके संसार को आलोकित किया था । इस क्षेत्र की विभूति राजर्षि जनक एवं माता सीता की साधना और चरित्र का इतिहास संसार के लिए आज भी प्रेरणास्पद है । इसी धरा धाम में भगवान् बुद्ध ने जन्म लेकर संसार को शान्ति और अहिंसा का पाठ पढ़ाया था । गार्गी, मैत्रेयी जैसी विदुषी नारियों, महर्षि याज्ञवल्कय, महर्षि ऋङ्गी, पाणिनि, पतंजलि जैसे ज्ञान और चेतना के आलोक से संसार को आत्मिक साधना, शब्द साधना और सामाजिक उत्थान के मंत्रों की साधना एवं सिद्धि प्रदान करने वाली महत्तम वैष्ट्रिय से परिपूर्ण तपःपूत तपस्वियों की साधना स्थली है नेपाल ।

ऐसे पवित्र तपःस्थली में कालान्तर में समाज में जो अन्धविश्वास, भेद-भाव, छुआ-छूत, जातीयता जैसी समस्याएँ दिखने लगी उनका निराकरण करके समाज को समुन्नति के मार्ग में आगे बढ़ाने के लिए अमर शहीद महात्मा शुक्रराज शास्त्री आदि युगपुरुषों ने अपना जीवन उत्सर्ग किया था । शुक्रराज के पिता पं. माधवराज जोशी ने १९वीं शताब्दी के महान् समाज सुधारक, वेदोद्धारक महर्षि दयानन्द सरस्वती से प्रेरणा प्राप्त कर अपना जीवन समाज के लिए अर्पण किया था । उससे इस देश के इतिहास को नया विचार, चेतना एवं दृष्टि प्राप्त हुई है । उन्होंने ही नेपाल में सबसे पहले विक्रम संवत् १९५३ में आर्यसमाज की स्थापना करके सामाजिक सेवा के अभियान को आगे बढ़ाया था ।

इसी सन्दर्भ में वैदिक संस्कृति के यथार्थ स्वरुप की प्रस्तुति के साथ ही सामाजिक जागरण, युवावर्ग में चरित्र और सदाचार के भाव की अभिवृद्धि, भौतिक, बौद्धिक और आर्थिक विकास के सम्भावनाओं की खोज आदि सामयिक चिन्तन द्वारा संसार में नई चेतना, उत्साह और प्रेरणा का भाव प्रवाहित करने के उद्देश्य से नेपाल आर्यसमाज द्वारा नेपाल की राजधानी काठमांडू में तीन दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन आयोजित किया गया । वर्ण, लिङ्ग, क्षेत्र आदि के आधार में किसी भेद-भाव बिना विश्व के अनेकों देशों के हजारों प्रतिनिधियों की सहभागिता में होने वाले इस महासम्मेलन के प्रमुख आकर्षण रहे ।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा एवं नेपाल आर्यसमाज के संयुक्त तत्वावधान में अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन टुँडिखेल काठमाण्डू (नेपाल) में दिनांक २०, २१, २२ अक्टूबर २०१६ को आयोजित किया गया । दिनांक २० अक्टूबर २०१६ को प्रातः १२ बजे से ३ बजे तक उद्‌घाटन सत्र के आयोजन में उद्‌घाटनकर्ता महामहिम राष्ट्रपति नेपाल श्रीमती विद्यादेवी भण्डारी जी द्वारा कार्यक्रम का उद्‌घाटन किया गया, इसके पूर्व ध्वजारोहण का कार्यक्रम महाशय धर्मपाल आर्य जी (एमडीएच) अध्यक्ष आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली द्वारा किया गया । अध्यक्षता श्री सुरेशचन्द्र आर्य प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली द्वारा किया गया, जिसमें अतिविशिष्ट अतिथि सर्वश्री सुरेन्द्र आर्य जी, दीनदयाल गुप्त जी, एस.के. शर्मा जी एवं डॉ. सत्यपाल सिंह जी के अतिरिक्त विशिष्ट अतिथि के रुप में सर्वश्री विश्रुत आर्य जी (प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका), धर्मपाल आर्य जी (प्रधान, आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट दिल्ली), हरिदेव रामधनी जी (उपप्रधान आर्य सभा मारीशस), महेश अग्रवाल जी (अध्यक्ष अग्रवाल सेवा केन्द्र काठमांडू), पवन मित्तल जी (अध्यक्ष नेपाल राष्ट्रीय मारवाड़ी परिषद), पं.

चिन्तामणि जी (वैदिक प्रवक्ता बर्मा), आचार्य सुभाष जी (वैदिक प्रचारक बांग्लादेश), पं. इन्दिरा जी किन्नो (हालैण्ड)आदि उपस्थित रहे।

भव्य शोभायात्रा दिनांक २० अक्टूबर २०१६ को प्रातः ७ से ९ बजे आयोजित की गई। तत्पश्चात् यज्ञ प्रातः ९.३० बजे से ११ बजे तक सम्पन्न हुई, जिसकी ब्रह्मा आचार्या नन्दिता शास्त्री (पाणिनि कन्या महाविद्यालय वाराणसी) रही। इसी प्रकार दिनांक २१ अक्टूबर २०१६ को प्रातः ६ से ७ बजे योग प्राणायाम, तत्पश्चात् प्रातः ८ से ९.३० बजे तक यज्ञ, भजन, प्रवचन के बाद प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय सत्र की आवृत्ति रही। रात्रि ८ बजे विचार टी.वी. नेटवर्क द्वारा फिल्म की प्रस्तुति की गई।

दिनांक २२ अक्टूबर २०१६ को प्रथम सत्र प्रातः १० से १२.३० बजे में सभी विदेश के आर्यसमाजों के प्रमुख एवं प्रतिनिधि सहित भारत वर्ष के समस्त प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभाओं के प्रधान को मंच में स्थान दिया गया। छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के यशस्वी प्रधान आचार्य अंशुदेव आर्य का सम्मान किया गया और उन्हें सम्बोधन करने के लिए कहा गया, प्रधान जी ने अपने सम्बोधन में छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा किये जा रहे उल्लेखनीय कार्यों का वर्णन किया गया साथ ही नेपाल में आर्यसमाज के लिए भूमि क्रय कर भवन निर्माण हेतु एक लाख रुपये का सात्विक दान की घोषणा की गई। लगभग ५०० आर्यजन छत्तीसगढ़ प्रान्त से काठमांडू पहुंचे हुये थे, जिसकी समारोह में भूरि-भूरि प्रशंसा की गई। सभी प्रान्तों एवं प्रान्ताध्यक्षों में सबसे कम आयु के सभा प्रधान एवं सभा को अपूर्व गौरव प्रदान की गई। महासम्मेलन के निमंत्रण पत्र में आमंत्रित अतिथि गण में आचार्य अंशुदेव आर्य एवं मंत्री दीनानाथ वर्मा का नाम अंकित किया गया था।

कार्यक्रम में भाग लेने वालों की जत्था चार बसों द्वारा श्री दयाराम वर्मा प्रधान आर्यसमाज बैजनाथ पारा रायपुर द्वारा एवं दो बसों की व्यवस्था सभा प्रधान आचार्य अंशुदेव आर्य के नेतृत्व में सलखिया (रायगढ़) से नेपाल तक की गई थी, जिसमें मंत्री दीनानाथ वर्मा एवं कोषाध्यक्ष श्री जोगीराम आर्य के अतिरिक्त सभा के कई पदाधिकारी, अंतरंग सदस्य एवं मान्य प्रतिनिधि सहित वानप्रस्थीगण उपस्थित थे।

मार्ग में बनारस रुककर मातृमंदिर कन्या गुरुकुल नई बस्ती रामापुरा बनारस के वार्षिक उत्सव में दिनांक १५ अक्टूबर १६ को उपस्थित रहे, दूसरे दिन बनारस भ्रमण करते हुए अयोध्या पहुंचकर विश्राम किये तथा दर्शनीय स्थानों का भ्रमश पश्चात् दिनांक १९ अक्टूबर २०१६ सोनौली बार्डर क्रास कर नेपाल में प्रवेश कर महात्मा गौतम बुद्ध के जन्म स्थली लुम्बिनी भ्रमण किये।

अगले दिन पोखरा दर्शन किये उसके बाद काठमांडू पहुंचकर श्री पशुपतिनाथ गौशाला/धर्मशाला में प्रातः स्नान उपरान्त कार्यक्रम स्थल टुँडिखेल पहुंच गये। दिनांक २१ अक्टूबर २०१६ को काठमांडू भ्रमण किये, जिसमें पं. शुक्रराज शास्त्री आर्यसमाज का प्रचारक को पेड़ में लटकाकर फांसी दी गई थी, उस स्थान जिसका नाम टेकू है का पवित्र दर्शन किये। जिस राजशाही ने महर्षि दयानन्द के सन्देश वाहक एवं आर्यसमाज के प्रचारक पं. शुक्रराज शास्त्री को सार्वजनिक रुप से मृत्युदण्ड दिया था, उसी राजशाही का दिनांक १ जून २००१ को पराभव हो गया।

छत्तीसगढ़ यात्रियों का दिनांक १४ अक्टूबर २०१६ को नेपाल प्रस्थान हुआ था, जो कि २३ अक्टूबर २०१६ गोरखपुर से वापसी का कार्यक्रम रहा।

कार्यक्रम से लौटकर - मंत्री श्री दीनानाथ वर्मा

समीक्षा का सुयश : जीते दो स्वर्ण पदक

नन्दिनी भिलाई । विगत दिनांक १६ एवं १७ अक्टूबर २०१६ को डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल छ.ग. म.प्र. प्रक्षेत्र -१ के तत्वावधान में डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल गेवरा जिला कोरबा में **अखिल भारतीय महात्मा हंसराज युवा महोत्सव** आयोजित हुआ, जिसमें छ.ग. क्षेत्र के अनेक विद्यालयों ने भाग लिया। डी.ए.वी. नन्दिनी की छात्रा **कुमारी समीक्षा आर्या** (सुपुत्री आचार्य कर्मवीर सम्पादक अग्निदूत) ने संस्कृत भाषण स्पर्धा में (आधुनिक शिक्षायां महर्षि दयानन्दस्य योगदानम्) में **प्रथम स्थान** प्राप्त कर कीर्तिमान कायम किया है।

दिनांक २० से २२ अक्टूबर को डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल से.-२ भिलाई में आयोजित **महात्मा हंसराज टूर्नामेंट** में एथलीट के अन्तर्गत **लम्बीकूद** में भी **"गोल्ड मेडल"** जीतकर संस्था को गौरवान्वित किया है। विद्यालय के प्राचार्य श्री राजशेखर पालीवाल ने हार्दिक प्रसन्नता प्रकट की है। छ.ग. प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा एवं अग्निदूत परिवार की ओर से "समीक्षा" के उज्ज्वलमय भविष्य के लिए शुभकामनाएँ।

- निजी संवाददाता सभा कार्यालय

अग्निदूत के ग्राहक सदस्यों की सेवा में

छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के मासिक मुख पत्र **'अग्निदूत'** के समस्त ग्राहक सदस्यों से निवेदन है कि अपना वार्षिक शुल्क १००/- यथाशीघ्र सभा कार्यालय को भेज दें, जिससे कि उन्हें नियमित रूप से 'अग्निदूत' भेजा जाता रहे। जिन सदस्यों के शुल्क तीन वर्षों से अधिक बकाया हो, उनसे निवेदन है कि वे अपना दसवर्षीय शुल्क ८००/- रु. भेजें। इस कार्य को यथाशीघ्र प्राथमिकता से करें। अन्यथा **इस मास से अग्निदूत भेजना बंद कर दिया जायेगा।** पत्र व्यवहार में अपना सदस्य संख्या तथा पूरा पता पिन कोड सहित अवश्य लिखें। **सभा का भारतीय स्टेट बैंक दुर्ग शाखा में सेविंग एकाऊन्ट नं. : 32914130515, आई.एफ.एस.सी. SBIN0009075 कोड नं. अथवा देना बैंक दुर्ग शाखा में सेविंग एकाऊन्ट नं. 107810002857 आई.एफ.एस.सी. BKDN0821078 है, जिसमें आप किसी भी भारतीय स्टेट बैंक/देना बैंक की शाखा से आनलाईन शुल्क जमा कर सभा कार्यालय के दूरभाष नं. 0788-4030972 द्वारा सूचित करते हुए अलग से पत्र लिखकर अवगत कर सकते हैं। अग्निदूत मासिक पत्रिका के सम्बन्ध में कोई भी शिकायत हो तो कृपया श्रीनारायण कौशिक को चलभाष नं. 9770368613** में सम्पर्क कर सकते हैं।

- दीनानाथ **वर्मा, मंत्री** मो. 9826363578

कार्यालय पता : 'अग्निदूत', दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग (छ.ग.) 491001, फोन : 0788-4030973

दि. 20 से 22 अक्टूबर 2016 को अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन टुँडिखेल (काठमांडू नेपाल) की झलकियाँ

CHH-HIN/2006/17407 नवम्बर 2016 डाक पंजी. छ.ग./दुर्ग संभाग / 99/2015-17

सम्पादक प्रकाशक मुद्रक आचार्य अंशुदेव आर्य द्वारा छत्तीसगढ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग के वैदिक मुद्रणालय से छपवाकर प्रकाशित किया गया।
प्रेषक : "अग्निदूत", हिन्दी मासिक पत्रिका, कार्यालय, छ.ग. प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग (छ.ग.) 491001